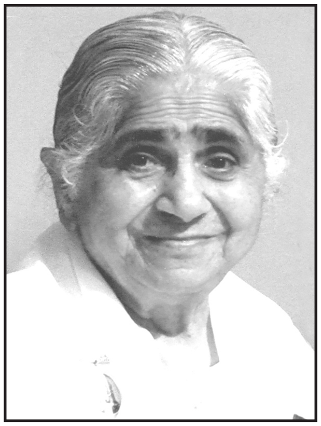

नव वर्ष के प्रति दादी जानकी जी का शुभ संदेश

सुख-शान्ति-पवित्रता से संपन्न नवविश्व के रचयिता, सर्वरक्षक परमपिता परमात्मा शिव की अति स्नेही संतान भाइयो और बहनो, पुराने और नये वर्ष के संगम की इस शुभ वेला में आप सभी ज्ञानामृत के ज्ञान-रत्न चुगने वाले ज्ञान-हंसों को हर पल ईश्वरीय प्रेम के आनन्दमय झूले में झूलने और झुलाने की बहुत-बहुत बधाइयाँ हों।

जब बाबा साकार में थे तब 'ज्ञानामृत' पत्रिका 'त्रिमूर्ति' के नाम से प्रारंभ हुई थी। 'ज्ञानामृत' नाम बाद में पड़ा है। अति स्नेही मातेश्वरी जी के देह-त्याग के बाद एक दिन मैं उनके कमरे में बैठी थी, 'त्रिमूर्ति' मेरे हाथ में थी, बाबा आये और पूछा, बच्ची, क्या कर रही हो, पढ़ रही हो? मैंने कहा, हाँ बाबा, मैगज़ीन पढ़ रही हूँ, कोई पूछे इसमें क्या है तो मुझे पता तो होना चाहिए ना। यह सुनकर बाबा ने बहुत प्यार किया। ज्ञानामृत में लिखने वालों की कलम कमल समान हो गई है। ज्ञानामृत कितना सुख देती है! मैंने कोई ज्ञानामृत नहीं छोड़ी होगी। त्रिमूर्ति पत्रिका में एक बार जगदीश भाई (प्रथम मुख्य संपादक) के लेख में पढ़ा था, 'सच्चाई, सफाई, सादगी'। मुझे अभी तक याद है वो पत्रिका, पूना के छोटे-से सेवाकेन्द्र में जब मैं थी तब वो पढ़ी थी। बाबा कहता है, बच्चों को मैगज़ीन अवश्य पढ़नी चाहिए, पढ़ना भी आगे बढ़ना है।

आज संसार में हिंसा और आतंकवाद के कारण सभी चिंतित हैं, अपने को असुरक्षित महसूस कर रहे हैं। मंदी तथा महंगाई ने भी सभी के मन में 'क्या होगा' यह प्रश्न पैदा कर दिया है। ऐसे में करुणा के सागर, सर्व के रक्षक और सर्व के कल्याणकारी पिता परमात्मा का यही संदेश है कि परिस्थितियों में भी स्वस्थिति को मज़बूत बनाकर एक पिता परमात्मा के लव में लीन रहें। सच्चाई, सफाई और सादगी के बल से संतुष्टमणि बन समस्याओं का समाधान करें, मर्सीफुल बनें। तो आप सभी हमारे समाधान स्वरूप भाई-बहनें, सभी को सर्व समाधान प्रदान कर खुशियों भरा नया युग जल्दी से जल्दी धरा पर साकार करने की ऊँची सेवा अवश्य करेंगे ना!

इस शुभकामना के साथ आप सभी को नव वर्ष तथा नव युग की बहुत-बहुत मुबारक हो! मुबारक हो!

आपकी दैवी बहन
बी.के. जानकी

अमृत-सूची

- संजय की कलम से........... 2
- दादा लेखराज' से 'प्रजापिता ब्रह्मा' तक....(सम्पादकीय) 4
- पुरुषोत्तम संगमयुग एवं......... 7
- ऐसी स्वच्छता सिखाई है.......10
- भाग्यविधाता (कविता)........11
- बाबा बोले - तेरा हाथ........12
- बच्चे घबराना नहीं...... 15
- स्नेहमयी सरिता का 16
- सुधा को मिला 20
- ब्रह्मा बाबा पुनः आ जाओ (कविता).................... 22
- नववर्ष से नवयुग की ओर....23
- सच्चा साथी..................25
- दृढ़ता से मिलती है...........26
- सचित्र सेवा समाचार......... 28
- मुझ गरीब को शाहों के...... 30
- दिल की सुनने वाला 31
- हम करते अभिनंदन (कविता).....................32

सदस्यता शुल्क

भारत	वार्षिक	आजीवन
ज्ञानामृत	70 /-	1,500/-
वर्ल्ड रिन्युअल	70/-	1,500/-
विदेश		
ज्ञानामृत	700 /-	7,000/-
वर्ल्ड रिन्युअल	700/-	7,000/-

शुल्क केवल '**ज्ञानामृत**' अथवा '**द वर्ल्ड रिन्युअल**' के नाम से ड्राफ्ट या मनीऑर्डर द्वारा भेजने हेतु पता है- संपादक, ओमशान्ति प्रिंटिंग प्रेस, ज्ञानामृत भवन, **शान्तिवन-307510 (आबू रोड) राजस्थान।**

- शुल्क के लिए सम्पर्क करें -
09414006904, 09414154383

वो दिन कितने प्यारे थे

मैं यह समझता हूँ कि मैं कितना सौभाग्यशाली हूँ! कई दफ़ा गद्गद हो जाता है मन। रात को नींद टूट जाती है। वो मूरत मम्मा की और बाबा की सामने आ जाती है। सृष्टि के आदिपिता, प्रजापिता ब्रह्मा, सारी सृष्टि के प्रथम, जिनको सब धर्म वाले भी आदिपिता मानते हैं, उनके अंग-संग रहने का मौका मुझे मिला। उन्होंने अपने हाथ से प्यार और दुलार किया, अपने हाथों से मुझे भोजन खिलाया, बच्चों की तरह से प्यार किया, वो दिन कैसे थे! बाबा तो कहते हैं कि बच्चे, मैंने बाँहें पसार रखी हैं, अव्यक्त स्वरूप में मुझ से मिलो। अव्यक्त स्वरूप में मिलती हैं संदेश पुत्रियाँ, गुलजार बहन जैसी बहनों को दिव्य दृष्टि से साक्षात्कार होता है। सेमी ट्रांस में तो हम भी जाते हैं लेकिन वो नज़ारे कुछ और थे। आप से सच कहता हूँ, वो नज़ारे कुछ और थे। वो क्या देखा हमने! बार-बार याद आता है कि वो कैसे प्यारे नज़ारे थे!

बाबा के ट्रांसलाइट तो हम देखते हैं, बाबा के चित्र हरेक कमरे में लगे रहते हैं और आजकल कला का विकास हुआ है, अच्छे-अच्छे चित्र बनते हैं। कैमरे भी अच्छे आ गये हैं। उनमें फोटो का रंग हलका, तेज जैसा चाहे कर देते हैं लेकिन वो जो बाबा को हमने देखा, जो दृष्टि उनसे ली, वो

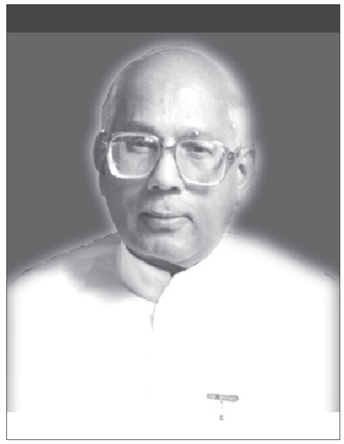

भूलता नहीं है! योग में बाबा हमारे सामने बैठे हैं, हम बाबा के सामने बैठे हैं, बाबा हमको दृष्टि दे रहे हैं। सचमुच ऐसा लगता था कि हम सागर के नीचे उतर रहे हैं। ऐसा अनुभव कौन करायेगा? फिर कब होगा? क्या ड्रामा के वो दिन हमेशा के लिये चले गये? वो फिर नहीं आयेंगे क्या? फिर 5000 वर्ष के बाद ही आयेंगे क्या? मन कई दफ़ा रोने को आता है। आँखों से आँसू आने को होते हैं, संभाल लेते हैं, चुप हो जाते हैं हम। ऐसा नहीं, हम बाबा से बिछड़ गये। बाबा तो हमारे साथ हैं। बाबा भी कहते हैं, मैं आपके साथ हूँ लेकिन वो जो दिन थे, वो तो बहुत ही प्यारे दिन थे। वो प्यार और दुलार जो बाबा ने दिया, उसके मुकाबले और कुछ भी नहीं है।

वो दिन, वो दिन भूल नहीं सकते

दो-ढाई फुट की एक छोटी-सी टेबल होगी जिस पर बाबा खाना खाते थे अपने कमरे में। उस कमरे में बाबा की कुर्सी होती थी। सामने हमें बिठा लेते। कहते थे, बच्चे, आओ, खाना खाओ। बाबा चावल खा रहे हैं, चावल में मूँग की दाल मिली हुई है। खिचड़ी बनी हुई है, उसमें पापड़ को तोड़कर मिलाके अपने हाथ से खिला रहे हैं। वो दिन, वो दिन भूल नहीं सकते। बाबा देख रहे हैं, दृष्टि दे रहे हैं। लोग मानते हैं कि ब्रह्मा ने सृष्टि रची। इतना तो मालूम है लेकिन क्या सृष्टि रची, कैसी रची, रचना की विधि क्या थी – वो नहीं मालूम। लोग समझते हैं कि हमारे शरीर के कान, आँख, नाक जो हैं, इन्हें ब्रह्मा जी ने बनाया। कबीर यह कहता है कि हे प्रभु! हे ब्रह्मा! आपने हमारी आँखें ऐसी क्यों बनाई जो झपकती हैं? 'अखियाँ तो छायी पड़ी पंथ निहार-निहार ..।' कहता है, 'आँखें तो मेरी बिछी हुई हैं उस पिया के मार्ग में, उसकी याद में। उसको देखने में लगी हुई हैं। मन करता है कि आँखें झपकें नहीं, अपलक होकर देखती रहें।'

बाबा ने शरीर छोड़ा, बाबा अव्यक्त हुए। जहाँ शान्ति स्तम्भ है, वहाँ पर दाह संस्कार हो रहा था, शरीर को अग्नि-समर्पित किया जा रहा था। मैं खड़ा था। एक वो दिन था जब बाबा की गोद में जाता था। कम-से-कम 100-150 दफ़ा बाबा की गोद में गया हूँगा। बाबा ने गले से लगाया, गालों को थपथपाया, सिर पर हाथ फिराकर प्यार किया और इतना

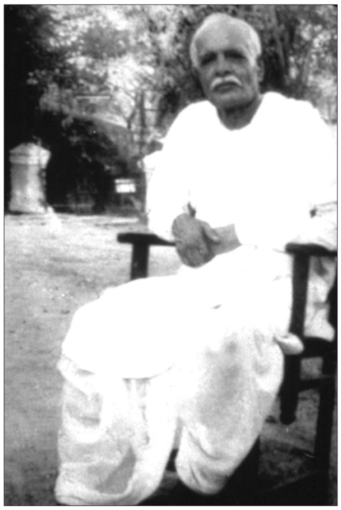

दुलार दिया। आज वो शरीर, जो एक चुंबक की तरह था, समाप्त हो जायेगा! क्या, उसके द्वारा फिर मिलन हो सकता है? जब बाबा हाथ लगाते, स्पर्श करते माथे पर, सिर पर तब ऐसा लगता था कि हम मालामाल हो गये। हमें और क्या चाहिए? वो अनुभव फिर कैसे होंगे? अभी उन हाथ, पाँव, पूरे शरीर को अग्नि को समर्पित कर दिया जायेगा, बस पूरा हो गया वह साकार का पार्ट! मैं आपको सच कहता हूँ, उस समय मन में संकल्प आया कि बाबा के साथ में मैं भी लेट जाऊँ। अब अपने इस शरीर को रखने का कोई उद्देश्य नहीं है। जब बाबा जा रहे हैं तो मैं भी उनके साथ जाऊँ, ऐसा मन करता था। फिर मन को ब्रेक लगाता था कि दुनिया कहेगी, क्या यह पागल है! यह क्या करता है! एक खेल में दूसरा खेल हो जायेगा।

ये सारे दृश्य कैसे भूल जायें?

कुछ स्थितियों में यह भी अनुभव किया कि बाबा ने अपने साथ भी लिटा लिया अपनी शय्या पर, अपने कमरे में, जहाँ अब भी एक चारपाई है, उस चारपाई पर। मैं उसको कभी जाकर चूम लेता हूँ, यह वो चारपाई है जहाँ पर बाबा लेटे रहते थे। मुझे भी साथ में लिटाया हुआ है, कुछ सुना रहे हैं, कुछ पूछ रहे हैं, दृष्टि दे रहे हैं, प्यार कर रहे हैं। ये सारे दृश्य कैसे भूल जायें? वो जो दिन थे, वो जो लोग थे उनमें क्या बात थी? बाबा ने किसी को स्पर्श किया तो उसको ऐसा लगता था, ये विकार हमेशा के लिए मेरे मन को छोड़ गये। इतनी शीतलता थी। जैसे कहते हैं ना, 'संत बड़े परमार्थी, शीतल जिनके अंग, औरों को शीतल कर दें, दे दे अपना रंग।'

ओहो! मम्मा की गोद में हम जाते थे, कितने लोग अपना अनुभव सुनाते हैं। सिर्फ यह मेरा ही अनुभव नहीं है कि जब मम्मा की गोद में हम गये, हमें सुधबुध नहीं रही। हम कहाँ थे उस समय! वो कौन मम्मा थी जो हमें इतना प्यार कर रही थी! वो जगत की अम्बा, सरस्वती मैया जिसको भक्त जन्म-जन्मान्तर याद करते हैं, जिसको विद्या की देवी मानकर उससे विद्या माँगते हैं, शीतलता के लिए शीतला देवी के रूप में उसका गायन करते हैं, उस संतोषी माता की गोद में हम थे, उसने हमारे सब पापों को हर लिया। हमें इतना शीतल कर दिया कि अब हमारे मन में कोई प्रश्न ही नहीं उठता। हमको बहुत सहज लगा पुरुषार्थ करना प्यारे बाबा और मीठी मम्मा के संग से।

बाबा कितने गुप्त रहे! अपने को कभी प्रत्यक्ष नहीं कराया

हम भगवान के बच्चे हैं, उनके हाथों से पालना ली है लेकिन सच में मैं बताऊँ कि बाबा कितने गुप्त रहे! अपने को कभी प्रत्यक्ष नहीं कराया। हमेशा मम्मा को आगे रखा। कितना मम्मा का सम्मान किया! जिस मम्मा को स्वयं ज्ञान देने के निमित्त बने। जब मम्मा किसी और शहर में जाती, बाबा उनको स्टेशन पर छोड़ने जाते। क्या ज़रूरत थी? हम बच्चे तो जाते ही थे लेकिन बाबा स्वयं छोड़ने जाते। ईश्वरीय सेवा करके मम्मा जब वापस आती थी, उनका स्वागत करने जाते थे गेट के पास।

अपने से छोटे, जो अपनी ही रचना हैं उनको भी बाबा कितना रिगार्ड देते, आगे रखते! बाबा हरेक को पहचानते हैं, उनका ड्रामा में क्या पार्ट है, इस बात को समझते हैं। और कौन है जो इन बातों को समझता है? मुझे अपना स्वयं का अनुभव है, बाबा ने मुझे समझा और पहचाना। किसने मुझे समझा और पहचाना? मैं था ही क्या? दुनिया की निगाह में मैं क्या था? न कोई लेखक था, न कोई धनी था, न कोई गणमान्य व्यक्ति था, न कोई मशहूर आदमी था। कुछ भी नहीं था। लेकिन भविष्य बनाने वाले और सबके पार्ट को जानने वाले तो बाबा ही हैं। बाबा ने किन-किन बच्चों को पहचान कर, उनको क्या-क्या पार्ट दिया और क्या-क्या उनसे करवाया, आश्चर्य लगता है। ❖

✍ सम्पादकीय

‘दादा लेखराज’ से ‘प्रजापिता ब्रह्मा’ तक का अलौकिक सफर

प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय के साकार संस्थापक पिताश्री प्रजापिता ब्रह्मा के नाम से आज जन-जन भिज्ञ हो चुका है। सन् 1937 से सन् 1969 तक की 33 वर्ष की अवधि में तपस्यारत रह वे ‘संपूर्ण ब्रह्मा’ की उच्चतम स्थिति को प्राप्त कर आज भी विश्व सेवा कर रहे हैं। उनके द्वारा किए गए असाधारण, अद्वितीय कर्त्तव्य की मिसाल, सृष्टि-चक्र के पाँच हजार वर्षों के इतिहास में कहीं भी मिल ही नहीं सकती। अल्पकालिक और आंशिक परिवर्तनों के पुरोधाओं की भीड़ से हटकर उन्होंने संपूर्ण और सर्वकालिक परिवर्तन का ऐसा बिगुल बजाया जो परवान चढ़ते-चढ़ते सातों महाद्वीपों को अपने आगोश में समा चुका है। वे आज की कलियुगी सृष्टि का आमूल-चूल परिवर्तन कर इसे सतयुगी देवालय बनाने की ईश्वरीय योजनानुसार, परमपिता परमात्मा शिव के भाग्यशाली रथ बने। जैसे हुसैन की शान बहुत थी परंतु जिस घोड़े पर वे सवार होते थे, उसकी शान भी कम नहीं थी। इसी प्रकार, सर्वशक्तिवान, सर्वज्ञ, सर्व रक्षक परमात्मा शिव की महिमा अपरमपार है परन्तु जिस Human Chariot (मानवीय रथ) पर सवार हो वे विश्व परिवर्तन का कर्त्तव्य करते हैं, उसकी आभा, प्रतिभा का वर्णन भी कम नहीं है। आखिर दादा लेखराज के जीवन के वे कौन-से गुण थे, कौन-सी विशेषतायें थीं, जो भोलानाथ शिव उन पर आकर्षित हो गए, उनके तन में सन्निविष्ट हो गए और विश्व परिवर्तन जैसे असंभव दिखने वाले कार्य के निमित्त उन्हें बना दिया। आइये, पिताश्री के जीवन-सागर में अवगाहन कर कुछ गुण-मोती चुन लें –

पिताश्री का दैहिक जन्म हैदराबाद (सिन्ध) में एक साधारण घराने में हुआ था। उनका शारीरिक नाम ‘दादा लेखराज’ था। उनके लौकिक पिता निकट के गाँव में एक स्कूल के मुख्याध्यापक थे। दादा लेखराज अपनी विशेष बौद्धिक प्रतिभा, व्यापारिक कुशलता, व्यवहारिक शिष्टता, अथक परिश्रम, श्रेष्ठ स्वभाव एवं जवाहरात की अचूक परख के बल पर सफल व प्रसिद्ध जवाहरी बने। उनका मुख्य व्यापारिक केंद्र कोलकाता में था।

भक्ति-भावना और नियम के पक्के

जवाहरात के व्यवसाय के कारण पिताश्री का संपर्क उस काल के राजपरिवारों से काफी घनिष्ट हो गया। विपुल धन-संपदा और मान-प्रतिष्ठा पाकर भी उनके स्वभाव में नम्रता, मधुरता और परोपकार की भावना बनी रही। उन्होंने किसी भी परिस्थिति में, किसी भी प्रलोभन के वश अपनी भक्ति-भावना और धार्मिक नियमों को नहीं छोड़ा। कई बार ऐसा होता था कि कुछ राजाओं तथा धनाढ्य व्यापारियों का दादा के यहाँ भोज होता

तो भी दादा उन्हें शुद्ध शाकाहारी भोजन ही देते। कई बार ऐसा भी संयोग होता कि किसी राजा या अन्य विशिष्ट व्यक्ति का दादा के यहाँ अतिथि के तौर पर गाड़ी द्वारा ऐसे समय पर आना होता जब दादा के भक्ति-पूजा या गीता-पाठ का समय होता, तब दादा उनके स्वागत पर स्वयं न जाकर अन्य किसी को भेज देते परंतु वे नित्य-नियम न तोड़ते। इस प्रकार, वे दृढ़ प्रतिज्ञ एवं नियम के पक्के थे। वे श्री नारायण की अनन्य भक्ति किया करते थे और उनका चित्र सदा अपने पास रखा करते थे।

प्रभावशाली व्यक्तित्व और मधुर स्वभाव

दादा प्रभावशाली व्यक्तित्व के मालिक थे। **उनका मस्तिष्क उन्नत, शरीर सुडौल, मुखमण्डल कांतियुक्त और होंठों पर सदा मुस्कान रहती थी। नब्बे वर्ष की आयु**

में भी वे सीधी कमर बैठ सकते थे, दूर तक अच्छी रीति देख सकते थे, धीमी आवाज़ भी सुन सकते थे, पहाड़ों पर चढ़ सकते थे, बैडमिन्टन खेल सकते थे और बिना किसी सहारे के चलते थे। वे प्रतिदिन 18-20 घंटे कार्य करते थे। इससे अंदाज़ा लगाया जा सकता है कि उनका जीवन कैसे संयम-नियम से युक्त तथा स्वस्थ रहा होगा। आलस्य और निराशा ने तो कभी उनका स्पर्श तक नहीं किया। राजकुलोचित व्यवहार, शिष्ट-मधुर स्वभाव और उज्ज्वल चरित्र के कारण उनकी उच्च प्रतिष्ठा थी। दादा स्वभाव से ही उदारचित्त और दानी थे। हैदराबाद के प्रसिद्ध दानी 'काका मूलचन्द आजवाला' उनके चाचा थे। दादा भी उनके साथ उनकी बैठक पर पीड़ित लोगों को खूब दान दिया करते थे।

अलौकिक जीवन का प्रारंभ – दिव्य साक्षात्कारों द्वारा

दादा का व्यापारिक और पारिवारिक जीवन, लौकिक दृष्टि से सफल एवं संतुष्ट जीवन था परंतु जब दादा लगभग 60 वर्ष के थे तब उनका मन भक्ति की ओर अधिक झुक गया। वे अपने व्यापारिक जीवन से अवकाश निकाल कर ईश्वरीय मनन-चिन्तन में लवलीन तथा अन्तर्मुखी होते गए। अनायास ही एक बार उन्हें विष्णु चतुर्भुज का साक्षात्कार हुआ और उसने अव्यक्त शब्दों में दादा से कहा – 'अहम् चतुर्भुज तत् त्वम्' अर्थात् आप अपने वास्तविक स्वरूप में श्री नारायण हो। कुछ समय के बाद वाराणसी में वे अपने एक मित्र के यहाँ एक वाटिका में जब ध्यान अवस्था में थे, तब उन्हें परमपिता परमात्मा ज्योतिर्लिंगम् शिव का साक्षात्कार हुआ और उन्होंने इस कलियुगी सृष्टि का अणु व उदजन बमों तथा गृहयुद्धों और प्राकृतिक आपदाओं द्वारा महाविनाश होते देखा। दादा को जिन दिनों यह साक्षात्कार हुआ, उन दिनों अमेरिका और रूस ने ऐसे बम नहीं बनाये थे। जब दादा को ये साक्षात्कार हुए, तो उन्हें अन्तःप्रेरणा हुई कि अब व्यापार को समेटना चाहिए। अतः दादा ने कोलकाता में जाकर अपने भागीदार को अपने दृढ़ संकल्प से अवगत कराया और फिर दादा व्यापार से अलग हो गये।

परमपिता परमात्मा शिव का दिव्य प्रवेश

इसके कुछ ही दिनों के बाद, एक दिन जब दादा के घर में सत्संग हो रहा था, तब दादा अनायास ही सभा से उठकर अपने कमरे में जा बैठे और एकाग्रचित्त हो गये। तब उनके जीवन का सबसे महत्त्वपूर्ण वृत्तांत हुआ। उनकी धर्मपत्नी व बहू ने देखा कि दादा के नेत्रों में इतनी लाली थी कि जैसे उनके अंदर कोई लाल बत्ती जग रही हो, दादा का कमरा भी प्रकाशमय हो गया था। इतने में एक आवाज़ ऊपर से आती हुई मालूम हुई जैसे कि दादा के मुख से दूसरा कोई बोल रहा हो। आवाज़ के ये शब्द थे –

'निजानन्द रूपं,
शिवोऽहम् शिवोऽहम्
ज्ञान स्वरूपं,
शिवोऽहम् शिवोऽहम्
प्रकाश स्वरूपं,
शिवोऽहम् शिवोऽहम्।'

फिर दादा के नेत्र बंद हो गये। कुछ क्षण के पश्चात् जब उनके नयन खुले तो वे कमरे में आश्चर्य से चारों ओर देखने लगे। उनसे जब पूछा गया कि वे क्या देख रहे हैं तो उनके मुखारविन्द से ये शब्द निकले – 'वह कौन था? एक लाइट थी। कोई माइट (might, शक्ति) थी। कोई नई दुनिया थी। उसके बहुत ही दूर, ऊपर सितारों की तरह कोई थे और जब वे स्टार(star) नीचे आते थे तो कोई दैवी राजकुमार बन जाता था तो कोई दैवी राजकुमारी बन जाती थी। उस लाइट और माइट ने कहा – यह ऐसी दुनिया तुम्हें बनानी है परंतु मैं ऐसी दिव्य दुनिया कैसे बना सकूँगा? .. वह कौन था? कोई माइट थी, एक लाइट थी ..।'

वास्तव में दादा के तन में परमपिता परमात्मा शिव ने ही प्रविष्ट होकर (निजानन्द रूपं, ...) ये महावाक्य उच्चारण किये थे। उन्होंने ही दादा को नई, सतयुगी दैवी सृष्टि की पुनर्स्थापना के लिए निमित्त बनने का निर्देश दिया था। अब दादा परमात्मा शिव के साकार माध्यम बने। ज्योतिबिन्दु परमात्मा शिव ब्रह्मलोक से आकर दादा के तन में प्रविष्ट होते और उनके मुख द्वारा ज्ञान एवं योग के ऐसे अद्भुत रहस्य सुना कर चले जाते जो प्रायः लुप्त हो चुके थे।

परिस्थितियाँ ही परमपुरुष का आह्वान करती हैं

उन दिनों देश-विदेश में प्रायः

लोगों की ऐसी दशा थी कि वे माँस, मदिरा इत्यादि का खूब सेवन करते थे। नारी का तिरस्कार होता था। पुरुष वर्ग नारी को विषय-वासना की ही गुड़िया मानते थे। वास्तव में संसार-भर में लोग काम-क्रोधादि विकारों के वशीभूत थे और इसे ही स्वाभाविक जीवन माने हुये थे। दैवी संपदा प्राय: मिट चुकी थी और आसुरी संपदा का बोलबाला था। अत: परमपिता परमात्मा शिव ने धर्म-ग्लानि के ऐसे समय दादा को निमित्त बनाकर विश्व में सदाचार, निर्विकारिता एवं पवित्रता अर्थात् दैवी संपदा की पुनर्स्थापना का कार्य शुरू किया। दादा, परमपिता शिव द्वारा बताये हुए नियमों का पालन करने में सबसे आगे-आगे थे।

दादा के मुख द्वारा परमपिता शिव ने बताया कि **सभी दुखों एवं समस्याओं का मूल देह-अभिमान एवं छह मनोविकार – काम, क्रोध, लोभ, मोह, अहंकार और आलस्य हैं, इन पर विजय पाना जरूरी है। इसलिये हरेक को आहार-विहार, संग इत्यादि को सात्विक बनाने के लिये कहा गया तथा यह बताया गया कि विश्व एक अभूतपूर्व चारित्रिक संकट के दौर से गुज़र रहा है; अब सभी को ब्रह्मचर्य का पालन करना जरूरी है। इसके बिना योगी बनना अथवा अन्य विकारों पर पूर्ण विजय पाना असंभव है।**

इस शिक्षा से कुछ विकारी लोगों ने सोचा कि हमसे भोग के विषय छीने जा रहे हैं। उनका हृदय विदीर्ण हो उठा। उन्होंने हल्ला-गुल्ला किया। दादा के भवन को भी आग लगा दी। हर प्रकार से कीचड़ उछाला और बंधन डाले। उन बेचारों को क्या मालूम कि ये वाणी दादा की न थी बल्कि पतित-पावन परमपिता परमात्मा शिव ही दादा को तथा विश्व के हर नर-नारी को स्वयं यह आदेश दे रहे थे और उस सर्वशक्तिमान का कल्याणकारी कार्य रुक नहीं सकता था। अत: उन सभी के कड़े विरोध और रुकावटों के बावजूद भी प्रभु से सच्ची लगन वाले तथा पवित्रता प्रेमी नर-नारी प्रतिदिन सत्संग में आते रहे।

मरजीवा जन्म होने पर उनका नाम – 'प्रजापिता ब्रह्मा'

पिताश्री ने विरोध करने वालों के प्रति भी घृणा नहीं की बल्कि उनके प्रति भी उनकी कल्याण-भावना सदा बनी रही। उन्होंने सब प्रकार की कड़ी आलोचना सही, विरोधियों का सामना किया परंतु परमात्मा के आदेश का पालन किया। इस प्रकार, यह नया आध्यात्मिक जीवन प्रारंभ होने पर अथवा मरजीवा जन्म होने पर, परमपिता परमात्मा शिव ने दादा को नाम दिया – 'प्रजापिता ब्रह्मा'। उनके मुखारविन्द द्वारा ज्ञान सुनकर पवित्र बनने का पुरुषार्थ करने वाले नर-नारी क्रमश: 'ब्रह्माकुमार' और 'ब्रह्माकुमारी' कहलाये।

प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय की स्थापना

पिताश्री ने श्रेष्ठ पुरुषार्थ करने वाली कन्याओं एवं माताओं (ब्रह्माकुमारियों) का ही एक ट्रस्ट बनाकर अपनी समूची चल एवं अचल संपत्ति उस ट्रस्ट को, मानव-मात्र की ईश्वरीय सेवा में समर्पित कर दी। इस प्रकार, सन् 1937 में 'प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय' की स्थापना हुई। लगभग चौदह वर्षों तक ईश्वरीय ज्ञान तथा दिव्य गुणों की धारणा का और योग-स्थित होने का निरंतर अभ्यास करने के बाद अर्थात् तपस्या के बाद, सन् 1951 में जब यह ईश्वरीय विश्व विद्यालय आबू पर्वत (राजस्थान) पर स्थानांतरित हुआ तब से लेकर अब तक ब्रह्माकुमारियाँ और ब्रह्माकुमार बहनें-भाई समूचे विश्व की ईश्वरीय सेवा में संलग्न हैं।

सन् 1969 में पिताश्री ने दैहिक कलेवर का परित्याग कर संपूर्णता को प्राप्त किया। उनके अव्यक्त सहयोग से ईश्वरीय सेवायें पहले की अपेक्षा द्रुत गति से बढ़ी जो आज विश्व भर में 133 देशों में फैल चुकी हैं। सूक्ष्म रूप में आज भी बाबा हर बच्चे को अपने साथ का अनुभव कराते हुए कदम-कदम पर सहयोग, स्नेह, प्रेरणाएँ प्रदान कर रहे हैं। बाबा का जाना ऐसा ही है जैसे कोई अपना कमरा और कपड़ा बदल लेता है। साकार के स्थान पर सूक्ष्म लोक में उनका वास है और साकार शरीर के स्थान पर आकारी फ़रिश्ता रूप में वे नित्य ही बच्चों से मिलन मनाते हैं। छत्रछाया बन बच्चों को निरंतर सुरक्षा-कवच प्रदान करने वाले पिताश्री जी को उनकी 40वीं पुण्यतिथि पर शत्-शत् नमन! ❖

जब परचिन्तन, परदर्शन और परमत से मुक्त होंगे तब परोपकारी बनेंगे

पुरुषोत्तम संगमयुग एवं आर्थिक (अ)व्यवस्था के अन्य कारण

• ब्रह्माकुमार रमेश शाह, गामदेवी (मुंबई)

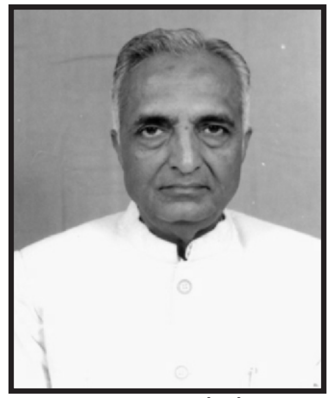

बहुत समय पहले हमने मुंबई में तथा अन्य स्थानों पर प्रदर्शनी लगाई थी उसमें सतयुग की अर्थव्यवस्था के बारे में मॉडल आदि बनाये थे कि कैसे उस जमाने में किसी के पास ज़्यादा धन होता था तो वह राजा के खज़ाने में जमा कराता था और जिसको ज़रूरत पड़ती थी तो राजा से ही धन ले लेता था अर्थात् कर प्रणाली (Tax) की समस्या नहीं थी। चीज़ों की लेन-देन के द्वारा ही कारोबार चलता था, फलस्वरूप, धन की लेन-देन बहुत कम होती थी। उस अर्थव्यवस्था को वस्तु विनिमय पद्धति (Barter System) कहते थे।

सतयुग-त्रेतायुग के बीतने के बाद जनसंख्या की वृद्धि हुई, विश्व की भौगोलिक परिस्थितियाँ भी बदलती रहीं जिसके कारण वस्तु विनिमय पद्धति में परिवर्तन हुआ और सिक्कों की ज़रूरत पड़ने लगी। सोने के सिक्कों (मोहर) का निर्माण होने लगा। इन सिक्कों द्वारा लेन-देन भी मर्यादित रूप में चलती थी क्योंकि जिसके पास जितने सिक्के होंगे वह उतना ही धंधा व्यवहार कर सकता था। बैंक आदि का कारोबार इतना नहीं था सिर्फ थोड़े से व्यापारी व्यापार के अलावा ब्याज पर पैसे उधार देने का धंधा करते थे और कई बार राजा को भी ज़रूरत पड़ती थी तो राजा को भी धन ये व्यापारी ही देते थे। यह तो प्रसिद्ध है कि मेवाड़ के महाराणा प्रताप को उनके ही राज्य के बहुत बड़े व्यापारी भामाशाह ने धन की मदद दी थी। ऐसे ही बड़े अकाल के समय जगडूशाह नाम के व्यापारी ने गरीब लोगों की बहुत मदद की थी।

समय बीतने के साथ जब बीसवीं सदी आई तो कागज़ के नोट छपने लगे। जैसा कि हमने पिछले लेख में लिखा कि सन् 1929-30 में बहुत बड़ी आर्थिक अव्यवस्था की आंधी आई थी। अमेरिका के अर्थशास्त्रियों ने सामाजिक न्याय और ज़िम्मेवारी के तहत सरकारों को कहा कि आप सभी कागज़ के नोट छापकर बड़े-बड़े प्रोजेक्ट का कार्य शुरू करो ताकि लोगों को नौकरी मिल जाये और धंधा भी बढ़े। अमेरिका के राष्ट्रपति रूजवेल्ट ने New Deal नाम से सरकार के खर्च की नीति (Policy) बनाई और बड़े-बड़े प्रोजेक्ट के द्वारा आर्थिक आंधी को दूर करने का प्रयत्न किया परिणामस्वरूप, राष्ट्रपति रूजवेल्ट तीन बार राष्ट्रपति के रूप में चुने गये।

सरकार के द्वारा कागज़ के नोट छपने लगे और इन्हें अर्थव्यवस्था में इस्तेमाल में लाया जाने लगा तो बैंकों ने एक नई नीति बनाई जिसके अन्तर्गत प्लास्टिक के दो प्रकार के कार्ड बनाए गए – डेबिट कार्ड और क्रेडिट कार्ड। डेबिट कार्ड के द्वारा हरेक व्यक्ति बैंक में जमा अपने पैसे की सीमा के अन्दर ही सामान खरीद सकता था परन्तु क्रेडिट कार्ड के द्वारा बैंकों ने उधार पर खरीद करने की छूट दी जिसके कारण विभिन्न प्रकार के क्रेडिट कार्ड जैसे, Gold Card, Silver Card, Platinum Card आदि बनाये गये। लोगों ने क्रेडिट कार्ड के द्वारा उधार पर बहुत सामान खरीदना शुरू कर दिया। उच्च धनाढ्य वर्ग में तो ये क्रेडिट कार्ड ही अर्थव्यवस्था में लेन-देन के साधन बन गये। क्रेडिट कार्ड के द्वारा बैंकों को भी बहुत लाभ होने लगे क्योंकि सामान्य प्रकार के ऋण से तो 12-15% का ही ब्याज मिलता था परन्तु क्रेडिट कार्ड के ऊपर तो बैंक 34-35% का ब्याज लेने लगे। इस प्रकार बैंको ने इस प्लास्टिक करेन्सी का बहुत विस्तार किया। अलग-अलग बैंकों ने इतने कार्ड जारी किये कि लोग क्रेडिट कार्ड के द्वारा एक बैंक से पैसा लेते थे और दूसरे को भुगतान करते थे। यहाँ पर एक बात ध्यान दिलाने वाली है कि मुंबई में जो आतंकवादी मारा गया उसके पास 8 बैंकों के क्रेडिट कार्ड थे। अभी भी भारत में अमीर लोगों में हरेक के पास चार क्रेडिट कार्ड होते ही हैं। सन् 2008 में क्रेडिट कार्ड द्वारा 58,000

करोड़ रुपये का व्यापार हुआ है। विदेशों में तो यह इतना व्यापक है कि जन्म के साथ ही क्रेडिट कार्ड का उपयोग होने लगता है और मरने तक चलता रहता है। बैंकों ने क्रेडिट कार्ड के ऊपर इतना कर्जा दिया जिसके फलस्वरूप बहुत बड़ी आर्थिक समस्या अमेरिका जैसे देशों में खड़ी हो गई। अमेरिका के एक ही बैंक ने इतना अधिक कर्ज़ा दिया हुआ है कि उसे डूबने से बचाने के लिए अमेरिकी सरकार ने अभी-अभी 309 अरब डालर की गारंटी दी है और 40 अरब डालर नकद में दिया है। यह आर्थिक समस्या कितनी बड़ी होगी इसका अंदाज़ा इसी बात से हो जाता है कि भारत के सभी बैंकों ने जितना कर्ज़ा दिया हुआ है उससे ज्यादा डूबत खाते का कर्ज़ा अमेरिका के एक बैंक का ही है। इस प्रकार क्रेडिट कार्ड के द्वारा एक बहुत बड़ी समस्या खड़ी हो गई है क्योंकि बैंको ने ज़्यादा ब्याज के लोभ में तथा ज़्यादा धंधा बढ़ाने के लिए बहुत पैसे उधार पर दे दिये थे। विदेशों में यह नीति रही है कि लोग ज़्यादा खर्च करें जबकि भारत की अर्थव्यवस्था में अभी तक सतयुगी संस्कार हैं और लोग बचत का ख्याल ज़्यादा रखते हैं जिसको अंग्रेजी में Savings based Economy कहते हैं। विदेशों में सरकारों ने तथा सामाजिक क्षेत्र के व्यवस्थापकों ने खर्च ज्यादा बढ़ाकर Expenditure based Economy का कारोबार ज़्यादा शुरू किया और लोगों को कहा कि आपको बचत करने की ज़रूरत नहीं है क्योंकि आपको बुढ़ापे में सरकार के द्वारा सामाजिक सुरक्षा के रूप में पैसे मिलते रहेंगे, अगर आपकी नौकरी भी नहीं होगी तो भी सरकार के द्वारा आपको पैसा मिलेगा।

एक बार मैं आस्ट्रेलिया में था, मुझे मालूम पड़ा कि बेरोज़गार व्यक्ति को 80 डालर प्रति सप्ताह सरकार से मिलते हैं और वही व्यक्ति अगर नौकरी करता है तो सप्ताह का वेतन 110 डालर मिलता है। मैंने पूछा कि 30 डालर के कारण आप नौकरी क्यों करते हो? तब मुझे जवाब मिला कि टाइम पास करने के लिए कुछ तो करना पड़ता है इसलिए हम नौकरी करते हैं। इंग्लैंड की वर्तमान महारानी एलिजाबेथ के पति ने भी आधिकारिक रूप से सरकार की आर्थिक नीति का विरोध करते हुए कहा है कि समाज के अंदर इस सामाजिक सुरक्षा के प्रावधान के द्वारा आलस्य और अलबेलेपन का निर्माण होता है परंतु वोट अर्थात् मत की प्राप्ति के कारण आर्थिक समस्या की आंधी के प्रति किसी ने भी दूरदृष्टि नहीं रखी और आर्थिक समस्या बहुत अधिक बढ़ती गई।

पिछले लेख में भी हमने लिखा था कि अमेरिकी सरकार ने 700 अरब डालर की सहायता देने का तय किया है इसके बावजूद भी समस्या बढ़ी हुई है। अब सरकार 800 अरब डालर की सहायता मदद के रूप में कारोबार में लायेगी। भारत में तो इसका इतना आघात नहीं है परंतु विदेशों में तो अनेकों को नौकरी से निकाल दिया गया है या छंटनी कर दी गई है। आर्थिक अव्यवस्था का सामना करने के लिए अमेरिका की सरकार ने अभी तीन शब्द लोगों के सामने रखे हैं – Reduce, Reuse और Recycle अर्थात् लोग खर्च कम करें और बचत ज्यादा करें; पहले जो चीज़ें एक बार इस्तेमाल करके फेंक देते थे उन्हें फिर से उपयोग में लाएँ; प्लास्टिक, कागज, टीन आदि कई चीज़ों का फिर से निर्माण कार्य में उपयोग करें। इस प्रकार से सरकार ने अपनी आर्थिक अव्यवस्था की समस्या को दूर करने का प्रयत्न किया है।

आर्थिक अव्यवस्था के दूसरे कारण हैं काला बाज़ार और भ्रष्टाचार। मिसाल के तौर पर स्वीट्ज़रलैंड के बैंकों में भारत के नागरिकों का काला धन अनुमानतः 69,888 करोड़ रुपया अर्थात् 1,456 करोड़ डालर, रशिया का 470 करोड़ डालर, इंग्लैण्ड का 390 करोड़ डालर, यूक्रेन का 100 करोड़ डालर और चीन का 96 करोड़ डालर जमा है (जैसा रिपोर्ट में छपा है)। ये तो सिर्फ बैंकों में जमा काले धन के ही आंकड़े हैं बाकी लौकिक व्यवहार में कितना काला धन होगा उसका तो अंदाजा लगाना ही मुश्किल है। भ्रष्टाचार के बारे में भी यह अंदाज है कि भारत के लोग प्रतिवर्ष कम से कम 26,000 करोड़ रुपये का भ्रष्टाचार करते हैं। इसके बावजूद भारत का नंबर बहुत आगे नहीं है। दुनिया के अन्य देशों में भी इतना ही भ्रष्टाचार बढ़ता जा रहा है।

इस प्रकार से आर्थिक अव्यवस्था की आंधी क्रेडिट कार्ड, भ्रष्टाचार एवं काले धन के द्वारा बढ़ती गई है और यह समस्या और भी बढ़ रही है। स्वीट्जरलैण्ड के बैंकों ने अपने पास जमा दुनिया भर के लोगों के काले धन को कई अन्य देशों को और अन्य कई बैंकों को कर्जे के रूप में दिया है और अब वे बैंक तथा वे सरकारें डूब रही हैं जिसके कारण स्वीट्जरलैण्ड के बैंकों को भी बहुत भारी आर्थिक समस्या आई हुई है। जिन्होंने स्वीटजरलैण्ड में काला धन जमा कर रखा था उनके लिए भी समस्या है। काला धन निश्चिंत होकर रख सकें, ऐसे दुनिया के सात देश हैं जहाँ पर काला धन रखने वाले को कोई भी प्रकार की समस्या नहीं होती। ऐसे देशों को आर्थिक दुनिया में Tax Heaven के रूप में गिना जाता है।

आर्थिक समस्या के अन्य भी कई कारण हैं क्योंकि सभी लोग उत्पादन के क्षेत्र में व्यस्त नहीं होते हैं। एक अर्थशास्त्री ने लिखा है कि भारत की कुल आबादी 106 करोड़ है परंतु इनमें काम करने वाले कितने हैं, यह एक प्रश्न है। अर्थशास्त्री ने लिखा है कि 9 करोड़ लोग रिटायर हैं; 30 करोड़ लोग (परिवार सहित) राज्य सरकार की नौकरी में, 17 करोड़ लोग केन्द्रीय सरकार की नौकरी में हैं; 15 करोड़ लोग बेकार हैं; 80 लाख लोग जेलों में और 1 करोड़ 20 लाख लोग बीमार हैं। 18 करोड़ बच्चे हैं जो पढ़ाई पढ़ते हैं। इन सबके कारण देखा जाये तो भारत में भी उत्पादन शक्ति के निमित्त कार्य करने वाले बहुत कम हैं और खर्च करने वाले तो सभी अर्थात् 106 करोड़ लोग हैं।

भारत सरकार भी पगार आदि के पीछे बहुत खर्च कर रही है। भारत सरकार ने इतना कर्जा लिया हुआ है कि उस का ब्याज 2006 में 1,46,192 करोड़ रुपये और 2007 में 1,71,971 करोड़ रुपये दिया गया। सरकार ने वर्ष 2007 में 1,30,948 करोड़ रुपये का नया कर्जा लिया है और सरकार के ऊपर विदेश का कर्जा 6,32,051 करोड़ रुपये का है। इसमें राज्य सरकारों का कर्जा या ब्याज का खर्चा नहीं है। सन् 2008 में केन्द्रीय सरकार का ब्याज का खर्च 1,90,860 करोड़ रुपये होगा अर्थात् केन्द्रीय सरकार का ब्याज का खर्च एक वर्ष में 18,889 करोड़ रुपये बढ़ेगा।

इन सब बातों के बीच में, शिव बाबा की अर्थव्यवस्था में ब्याज के खर्च की कोई बात नहीं है। दैवी परिवार की अर्थव्यवस्था में उधार पर पैसा लेने की छुट्टी नहीं है। मैंने शिव बाबा से सवाल पूछा था कि आप ब्याज और उधार की अर्थव्यवस्था के लिए क्यों छुट्टी नहीं देते हो? इस पर बाबा ने कहा कि तुम्हारी अर्थव्यवस्था तो सतयुग की अर्थव्यवस्था के निर्माण के लिए बनी हुई है और सतयुगी अर्थव्यवस्था में ब्याज पर लेन-देन, काला बाजार आदि का कोई स्थान नहीं है। इसलिए बाबा ने सिखाया है कि ईश्वरीय सेवायें अपने ही तन-मन-धन के आधार पर करनी हैं। शिव बाबा ने अन्यों से मांगने के लिए भी मना किया है। मुझे अभी भी याद है, दिसंबर 1968 में ट्रस्ट बना और ब्रह्मा बाबा ने हमें मार्गदर्शन दिया कि बच्चे, तुमको बाबा ने ट्रस्ट के द्वारा पैसे लेने की छुट्टी दी है परंतु याद रहे, लेगा तू और देना मुझे पड़ेगा क्योंकि लोग तुझे मेरे कारण देते हैं और मुझे एक का सौ गुना करके देना पड़ेगा, वो भी सतयुग में देना पड़ेगा इसलिए मुझे कम से कम देना पड़े इसका ख्याल करके तुम्हें यज्ञ की अर्थव्यवस्था का कारोबार करना है। ज़रूरत से ज्यादा धन इकट्ठा नहीं करना और कम खर्च बालानशीन का सिद्धांत हमेशा ध्यान में रखना और सबको बताते रहना।

सतयुगी अर्थव्यवस्था के बारे में 'पवित्र धन' नाम की किताब में शिव बाबा की अर्थव्यवस्था के बारे में हमने लिखा है और इस अर्थव्यवस्था को अंग्रेज़ी में हम Pure money Economics कहते हैं। शिव बाबा की अर्थव्यवस्था ही आज के ज़माने की आर्थिक अव्यवस्था का एकमात्र समाधान है। ❖

जो मनुष्य सच्चे दिल से परमपिता परमात्मा का सहारा लेता है और अपना तन-मन-धन उसे अर्पण कर देता है, वह निर्भय, निश्चिन्त, हर्षित तथा संतुष्ट बन जाता है।

ज्ञानामृत के सर्व पाठकों को नव वर्ष की कोटि-कोटि शुभ बधाइयाँ

ऐसी स्वच्छता सिखाई है बाबा ने

• दादी जानकी

चाहे कितनी भी सेवा हो, बाबा ने हम बच्चों को सिखाया है कि पढ़ाई के समय कभी सेवा में व्यस्त नहीं होना। बाबा कहते हैं, अशरीरीपन की स्थिति में बैठो तो सेवा याद न आए। सेवा ज़रूरी है पर बाबा के महावाक्यों की कीमत बहुत बड़ी है। सेवा हम नहीं करेंगे तो कौन करेगा? सेवा करते मुस्कराएँ नहीं तो मुश्किलातें आती हैं। मुस्कराना बंद हुआ और मुश्किलातें आ जाती हैं। तो आज हम विचार करेंगे, याद और सेवा में कौन-कौन से विघ्न पड़ते हैं।

याद में देह-अभिमान हैरान करता है। देह-अभिमान वाला कहेगा, यह कैसे, वो कैसे? लेकिन याद करते समय मन में शिकायत लेकर न बैठें, भावना से बैठें। बाबा को देखने में ही माया आती है। बाबा देखने में नहीं आता है, और कोई दिखाई पड़ जाता है। बैठे होंगे बाबा के कमरे में, बाबा के चित्र के सामने, याद कोई और बात आ रही है। अगर बाबा के सामने बैठ और बातें याद आती हैं तो वो कौन है? अरे, बात तो पूरी हो गई, याद तो प्यारे बाबा को करना है। याद से अवस्था परिपक्व हो जाती है।

सेवा में कौन-से विघ्न आते हैं?

सेवा में भाव-स्वभाव के विघ्न आते हैं। क्या करें, इसका स्वभाव ऐसा है, उसका ऐसा है। ऐसा नहीं होना चाहिए, वैसा नहीं होना चाहिए। अरे, सेवा कर रहे हो या ऐसे, वैसे का चिन्तन कर रहे हो। सेवा का भाग्य भगवान ने दिया, वो करा रहा है। समझ तो थी ही नहीं सेवा करने की। न याद में रहने की समझ थी, न सेवा की। गीता में भी है, सबसे अच्छी सेवा है विष्णु समान बनने की परन्तु पहले मन्मनाभव। ऐसे नहीं, सेवा, सेवा, सेवा। पहले मन्मनाभव, फिर मध्याजी भव। गुण और कर्म सेवा करते हैं। लक्ष्मी-नारायण जैसा बनने का लक्ष्य है। उन जैसे गुण और कर्म प्रैक्टिकल में हैं तो स्वत: सेवा होती है। ऐसे जीवन को देखकर अनेक आत्माएँ सामने आ जाती हैं।

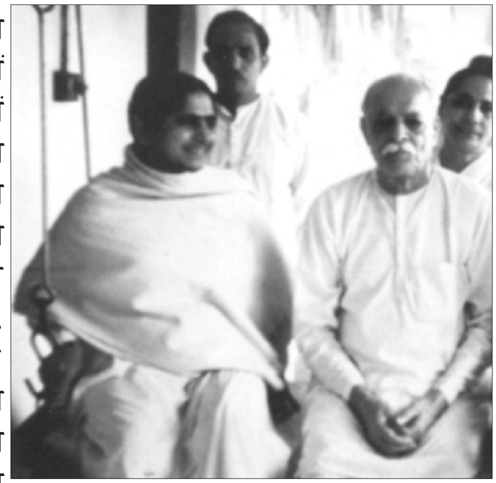

कुमारका दादी और मम्मा को देखकर मैं ब्रह्माकुमारी बनी। केवल छह महीनों में ये दोनों एकदम बदल गईं। चन्द्रमणि दादी, छोटी-सी कुमारी, वह भी चेंज हो गई। मम्मा 17 वर्ष की, दादी 14 साल की और चन्द्रमणि 12 साल की। इतनी छोटी आयु में इतना परिवर्तन, शक्लें चमकने लगीं। इनको देख मुझे ऐसी लगन लगी कि ये बन गई, मैं भी अभी बनूँ, बनूँ, बस बन जाऊँ। आजकल बनने में समय लगाते हैं। अब हमको दूसरों को बनाने की धुन लगानी है।

जब दिल्ली में पहली बार सेवार्थ गई तो लोग पूछते थे, आपके कपड़े इतने सफेद कैसे हैं? उस समय तो हम प्रेस भी नहीं करते थे। दीदी सिखाती थी, कपड़ा कैसे धोना है। यदि कपड़े पर दाग है तो कहते थे, इसका योग ठीक नहीं है। भले खाना बना रहे हों पर हल्दी का दाग न हो। उन दिनों कोयले पर खाना बनाते थे पर हाथ काले न हों, सफाई का इतना ध्यान रखते थे। मैंने बाबा को बताया, बाबा, लोग पूछते हैं, आपके कपड़े इतने सफेद कैसे हैं? स्पेशल सोप (विशेष साबुन) है क्या? बाबा ने हँसी में कहा, बच्ची, बोलो, पेरिस से धुलाई होकर आते हैं हमारे कपड़े। कितनी सफाई सिखाई है बाबा ने! इतनी सफाई यदि ब्रह्माकुमारी में नहीं है तो वह ब्रह्माकुमारी कैसे कहलाएगी? मम्मा ने, ओम मण्डली में बहुत सिखाया। एक कमरे में पाँच जन भी विश्राम करते थे पर कोई नैपकिन, चप्पल अव्यवस्थित हो नहीं सकती। पूरी अलमारी का एक ताक मिलता था कपड़े रखने के लिए। वो भी चैक होता था कि सामान कैसे रखते हैं? अभी भी शान्तिवन भण्डारे में कई हज़ार का खाना बनता है, सफाई

कितनी है। आश्चर्य लगता है भण्डारे वालों को देखकर, उनके कपड़े भी साफ रहते हैं। लगता नहीं है, ये खाना बनाने वाले हैं। इतना प्रसाद बनाते हैं, चेहरे से त्याग की, सेवा की झलक मिलती है। यदि किसी का मन ठीक न हो तो, मैं उसके हाथ का खाना भी न खाऊँ। जिस को मोह-ममता जागी, मैं कहती हूँ, तुम खाना नहीं बना सकते क्योंकि सारे भोजन पर उसका असर होगा। ऐसे भोजन का बाबा को भोग भी नहीं लगा सकेंगे। इन्हीं धारणाओं के कारण मैं जिन्दा हूँ। बाकी ऐसा नहीं है कि जो आया सो खा लिया, नहीं, कभी नहीं। भोजन खिलाने वालों को बाबा कहता था, बच्ची घुँघरू पहनकर डांस करो। जब ब्रह्मा भोजन होता था, बाबा हिस्ट्री हाल में संदली पर बैठता था, हम सब सामने बैठते थे। बाबा कहता था, घुँघरू पहनकर नाचो बच्ची, खाना खिला रही हो ना! मोहनथाल बाँटा जा रहा था। कोई चक्की (piece)बड़ी थी, कोई छोटी। बाबा ने दीदी को बुलाकर कहा, यह अच्छी बात नहीं है, किसी का संकल्प चलेगा, इसको बड़ी, मुझे छोटी क्यों मिली? तब से लेकर प्रसाद का हर टुकड़ा एक आकार का मिलेगा। बाबा उंगली लगाकर टोली (प्रसाद) की चेकिंग करता था। उंगली अन्दर गई तो भी ठीक नहीं, सख्त है तो भी ठीक नहीं, खाकर नहीं बताता था, उंगली से बताता था। टोली एक्यूरेट चाहिए बाबा को। बाबा ने हर बात में एक्यूरेसी सिखाई है।

❖

भाग्यविधाता

ब्रह्माकुमार प्रशान्त बुधिया, बिलासपुर (छ.ग.)

क्यों और किसको छूने को बेताब है यह पवन,
क्यों चढ़ता जाता सागर, करने को किसको नमन
क्यूँ खड़ा दिखता, हाथ जोड़कर एक तरफ यह अंबर
डुलाना चाहता है हर वृक्ष, क्षण भर को भी किसको चंवर

क्यों लेने लगी है यह प्रकृति भी एक नयी अंगड़ाई,
क्यों तैयार दिखते हैं सारे विकर्म, संस्कार लेने को विदाई,
क्यों लगता कि जैसे मिल गया सबको अलादीन का चिराग
क्यों महसूस होता कि हर मन हो गया किसी फूल का पराग
क्यों छेड़ते दिखता जैसे एक तराना हर कण-कण
फिर भी लगता कि जैसे बिल्कुल शांत हो गया हो हर मन

कौन है वो जो हर बुझते दिये में ज्ञान का घी भर रहा है
हर टूटे, निराश, हताश, उदास दिल में उम्मीद की किरण धर रहा है
क्यों हर्षाने लगा है हर पल हर मन किसके आ जाने से
क्यों लगता कि मिल गया हो सब कुछ किसको पा जाने से
क्यों लगता कि जैसे फिर से लय में आ गई यह वसुधा
और खुलने लगा है सबके भाग्य का खाता
हाँ, आ गया है वही सर्व दाता
हम सबका भाग्यविधाता

पर जैसे-जैसे खुलता जा रहा है, हमारे पुराने संस्कारों का ताला
समझ में आता जा रहा है कि पड़ा है इस बार सर्वशक्तिवान से पाला
लुटाते जाते और जमा करते, तुम्हीं ये खजाने हमारे नाम पर
बन के धर्मराज दोगे हिसाब फिर कर्मानुसार सुखधाम पर
तुम वही तो हो हम सबके आकाओं के आका
मेरे भाग्यविधाता, मेरे भाग्यविधाता

हम बच्चे तुम्हारे हैं कितने भाग्यशाली और शक्तिशाली
कि जाता नहीं हम आत्माओं का कोई भी संकल्प खाली
तो करता हूँ यही संकल्प इसी वक्त, तुरंत अभी,
कि कल्प-कल्प, पल-पल, हर क्षण याद हो सिर्फ तुम ही
हर पल याद रहो सिर्फ तुम ही, दाताओं के दाता
मेरे भाग्यविधाता, मेरे भाग्यविधाता

बाबा बोले – तेरा हाथ मेरे हाथ में है

• ब्रह्माकुमार लक्ष्मण, कुरुक्षेत्र

मेरा जन्म मुलतान (पाकिस्तान) के एक छोटे-से गाँव डाँवरा में हुआ। गांव में छठी कक्षा पास करके मैं अंग्रेजी मिडल स्कूल के बोर्डिंग में दाखिल हुआ और फिर हाई स्कूल के बोर्डिंग में दाखिल हुआ। दसवीं कक्षा के बाद मुलतान में डी.ए.वी. कालेज में दाखिल हुआ। आदरणीय ब्रह्माकुमार जगदीश भाई जी (ज्ञानामृत के पूर्व सम्पादक) भी वहीं मुझसे एक कक्षा आगे पढ़ रहे थे। सन् 1947 में हिन्दू-मुस्लिम दंगे भड़कने के कारण हमने मुलतान छोड़ दिया और परिवार सहित कुरुक्षेत्र ज़िले के शरणार्थी शिविर में सही सलामत पहुँच गए। पढ़ाई में व्यवधान तो पड़ा परन्तु शीघ्र ही डी.ए.वी. कालेज लाहौर, अम्बाला शहर में चालू हो गया और वहाँ से बी.एस.सी. की पढ़ाई पूरी करके मैं शिक्षक के पद पर नियुक्त हो गया। इसके बाद मैंने छोटे भाई-बहनों की पढ़ाई की ज़िम्मेवारी उठा ली और आत्मप्रकाश भाई (सम्पादक, ज्ञानामृत) को सन् 1956 में पटियाला इंजीनियरिंग कालेज में दाखिल करा दिया।

प्यारे बाबा का प्रथम दीदार

आत्म प्रकाश भाई को इन्जीनियरिंग की पढ़ाई पढ़ते-पढ़ते प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय द्वारा दिए जाने वाले सत्य ज्ञान की लगन लगी और वह रूहानियत से सराबोर रहने लगा। मैं जब उससे मिलने गया तो उसने मुझे भी इस सत्य ज्ञान की समझ देनी चाही परन्तु मेरा जीवन सोने के पात्र समान न होने के कारण, शेरनी के दूध समान यह पावन ज्ञान उसमें समा नहीं पा रहा था। पटियाला में हमारी लौकिक माता जी भी इनके साथ रहकर खाना आदि बनाती थी। उसको भी इसने ईश्वरीय ज्ञान सिखा दिया।

क्रिसमस की छुट्टियों में आत्म प्रकाश जी मेरे पास आए और कहा कि संस्था के साकार संस्थापक प्यारे ब्रह्मा बाबा देहली राजौरी गार्डन में आए हैं, आप भी चलें। मैं भले ही इतना इच्छुक नहीं था परन्तु इनके ज़ोर देने से मैं युगल (दिवंगत ब्रह्माकुमारी प्रेम, कुरुक्षेत्र) सहित आत्म जी के साथ हो लिया। देहली में सेवाकेन्द्र पर पहुँचकर आँखें बाबा को खोजने लगीं। मानवता का वो आदि पिता एक कमरे में कुछ बहनों के साथ बैठा था, मुझे खिड़की से उनकी केवल पीठ ही दिखाई दी। फिर हमें क्लास में भेज दिया गया। दादी हृदयमोहिनी जी क्लास करा रही थीं। हम बैठे ही थे कि सिर पर गर्म टोपी पहने, आत्मिक प्रेम और रूहानियत का प्रकाश फैलाते हुए अति स्नेही ब्रह्मा बाबा भी क्लास में पहुँच गए परन्तु बाबा आए और चले गये, सभा में बैठे नहीं।

इसके बाद हम एक लौकिक रिश्तेदार के घर जाकर ठहर गए। अगली सुबह आत्म प्रकाश भाई तथा प्रेम जी तो सुबह-सुबह ज्ञान-कक्षा में पहुँच गए पर मैं ठण्ड और सुस्ती के अधीन हुआ बिस्तर में ही पड़ा रहा। प्यारे बाबा से वरदान प्राप्त कर 8 बजे ये वापस लौटे और प्रेम जी ने बताया कि मुझे बाबा ने कहा – **आप कल्प पहले वाली बिछुड़ी हुई गोपी हो।** ये सब रूहानियत की लहरों में इतने अधिक लहरा रहे थे कि इन्होंने फैसला कर लिया कि आत्म प्रकाश भाई अब नौकरी करे, कुछ कमाए और हम सब ज्ञान-हंसों की पालना करे क्योंकि यह (लक्ष्मण अर्थात् लेखक) तो ज्ञान में रुचि लेता नहीं है। इनकी बातों से जब ऐसे संकेत मुझे मिले तो मैंने आत्म प्रकाश जी को कह दिया कि जाओ, जहाँ जाना हो। क्रोध और दु:ख से बोझिल मेरे मन की यह प्रतिक्रिया इसलिए हुई कि मैं इसे पढ़ाना चाहता हूँ और यही मेरे इस स्नेह को सन्देह की नज़रों से देखकर

मेरे विरुद्ध जाने की योजना बना रहा है। मुझे भगवान तो दिख नहीं रहा था, इसी पर आस थी, जब आस टूटती नज़र आई तो मेरा मन दुखी हो गया। परन्तु तभी इसने स्थिति को सम्भाल लिया और मुझे कहा कि मैं आपकी खातिर पढूँगा। इसके ऐसा कहने पर मैं शांत हुआ।

कमजोर आत्मा पर तमोगुणी आहार का असर

वापस लौटने पर प्रेम जी मुझे रोज़ ईश्वरीय ज्ञान समझाने लगी। घर में प्याज-लहसुन भी बन्द हो गया। मुझे शिवबाबा का परिचय तथा 5000 वर्ष का सृष्टिचक्र समझ में आने लगा परन्तु इसी बीच एक बार, चार दिन घर से बाहर रहना पड़ा और योगयुक्त भोजन न मिलने से मानसिक अवस्था पुराने तमोगुणी ढर्रे पर आ गई। आत्मा मज़बूत नहीं बनी थी, इस कारण उसकी नींव हिलने के लिए थोड़ा-सा तमोगुणी संग ही काफी था। आत्म प्रकाश भाई जब भी आते, मुझे ज्ञान के गुह्य राज़ समझाते पर मेरा एक ही उत्तर था कि आपका ज्ञान अच्छा है परन्तु मैं इसमें चल नहीं सकता।

जीवन परिवर्तन की आधारभूत मुख्य दो घटनाएँ

पहली घटना वह है जब मैं एक दिन भोजन करने बैठा था। आत्म प्रकाश जी की जान-पहचान का एक ज्ञानी भाई, जो इन्हीं के कॉलेज में प्रोफेसर था, पहुँच गया। मैंने शिष्टाचारवश कहा – आओ भाई, आप भी खाना खाओ। उसने झट कहा – आप तो सिगरेट पीते हो (मैं आपके साथ कैसे खा सकता हूँ)। मैं मुख से तो निरुत्तर हो गया पर मन ने मुझसे कहा – देख, यह सिगरेट पीना तो दूर, पीने वाले के पास बैठना भी नहीं चाहता, कितना नियन्त्रण है इसका अपने पर, क्या मैं ऐसा नहीं बन सकता? और उसी समय मैंने प्रण कर लिया कि ज़िन्दगी में आगे कभी नहीं पिऊँगा। इस प्रण से मैं उस दिन के बाद कभी नहीं हिला। कहते हैं, **प्रवचन से बड़ा आचरण होता है। स्वयं के आचरण में उतारी हुई धारणा ही दूसरे के जीवन में उतारी जा सकती है। सिगरेट पीने वाला, दूसरे की सिगरेट कैसे छुड़ाएगा, वह तो प्रोत्साहित ही करेगा।**

दूसरी घटना में मुझे लौकिक माँ का लोकलाज से दूर ऐसा निर्मोही रूप देखने को मिला कि मेरे अन्दर निर्मित काम, क्रोध की दीवार खिसकने लगी। एक दिन लौकिक माता को साइकिल पर बिठाकर पटियाला आश्रम पर ले जा रहा था तो रास्ते में इन्होंने कहा – लक्ष्मण, आप भी ज्ञान में चलो। मैंने कहा – माताजी, मेरा कोई बच्चा नहीं है, दुनिया हँसेगी। माताजी ने तुरन्त उत्तर दिया – मुझे पोते या पोती की कोई ज़रूरत नहीं है। मैं तो हतप्रभ रह गया। कोई भी भारतीय दादी, सदा ही पोते-पोती की बाट जोहती रहती है। यहाँ तो इस सम्बन्ध में यह कहावत भी प्रचलित है कि ब्याज, मूल से ज्यादा प्यारा होता है परन्तु मेरी माँ को इतनी बड़ी क्या चीज़ मिल गई जो यह इस सांसारिक तृष्णा से भी पार हो गई। माँ की इस छोटी-सी बात का मेरे मन पर हज़ारों उपदेशों से भी ज़्यादा गहरा प्रभाव पड़ा। चार शब्दों ने मानो मुझे लौकिकता से परे दिव्य प्रकाश का साक्षात्कार करा दिया।

पाप की नई परिभाषा

आश्रम पहुँचने पर मैं भी योग-कक्ष में चला गया। दो बहनें योग करा रही थीं। मैं ज्ञान तो सुनता ही रहता था, कुछ बातें स्मृति में पक्की हो गई थीं, उन्हीं के आधार पर 'मैं आत्मा हूँ, शरीर का मालिक हूँ' खुली आँखों से इस प्रकार का चिन्तन करते हुए मैं तन और मन से स्थिर हो गया। बहुत सुन्दर अनुभव हुआ। छाती ठण्डी और मन शान्त हो गया। चालीस मिनट के बाद योग का क्लास पूरा हुआ और गोपी दादी (लीला दादी की बहन) ने सभी से पूछा कि आज सोमनाथ बाबा का दिन सोमवार है, किसी को कोई अशुद्ध संकल्प तो नहीं आया। गला रूँधा हुआ होने के कारण मैं तो कोई उत्तर दे न सका, शेष सभी ने अपनी-अपनी स्थिति अनुसार हाँ या ना में उत्तर दिए। इसके बाद गोपी दादी ने प्रवचन किया जिसमें बताया कि **किसी के बारे में यह सोचना कि उसका स्वभाव गलत है, यह पाप है।** इतने सधे हुए शब्दों में ऐसी गहरी और सच्ची बात मैंने आज तक कहीं नहीं सुनी थी। मैं नेहरुजी और गांधीजी की किताबें पढ़ता था, 'Experiment With Truth' भी

मैंने पढ़ी थी पर ऐसी दिल में घर कर जाने वाली कोई बात मुझे अनुभव नहीं हुई थी। मेरे भीतर से तुरन्त आवाज़ आई – लक्ष्मण, तुम तो सारा जीवन पाप ही करते रहे हो। सदा ही दूसरों के बारे में ग़लत ही सोचते रहे हो। अपने ऐसे स्वभाव को आमूलचूल परिवर्तन करने की मैंने उसी समय दृढ़ प्रतिज्ञा कर ली।

तामसिक खाद्य का त्याग

अब मेरा मन बदल गया मानो सूई की जंक उतर गई और परम चुम्बक ने उसे अपनी ओर खींच लिया। ज्ञान, योग, धारणा और सेवा की सीढ़ियाँ जल्दी-जल्दी चढ़कर संपूर्णता की मंज़िल पर पहुँचने की लगन लग गई। मात्र लगन नहीं लेकिन लगन के साथ अगन भी। अपने सेवास्थान छिछरौली लौटने से पहले मैंने दादी मिट्ठू (पटियाला सेन्टर प्रभारी) से निवेदन किया कि मेरे साथ एक ब्रह्माकुमारी बहन भेजो, मैं छिछरौली में ईश्वरीय सेवा करवाऊँगा। उन्होंने कहा – भेज देंगे। फिर मेरे कहने पर अंग्रेजी भाषा में भ्राता जगदीश चन्द्र जी द्वारा लिखी गई 'द रीयल गीता (The Real Geeta)' की एक प्रति मुझे दे दी। ईश्वरीय आनन्द में झूमता हुआ मैं अपने स्थान पर लौटा और अगले ही दिन घर में रखा हुआ प्याज-लहसुन का थैला उठाकर, सोम नदी के पास गड्ढा खोदकर गाड़ आया। किसी ने कहा – आप नहीं खाते तो हमें दे दो। मैंने कहा – जो आहार देवताओं को स्वीकार नहीं, उसको न मैं खाऊँगा और न ही किसी को खिलाऊँगा, मन मन्दिर है, इसमें तुम भी शुद्ध अन्न का ही भोग लगाओ। आंगन में रहने वाली नौ मुर्गियों को भी मैंने 20 रुपये में बेच दिया और इसके बाद आंगन को धोकर स्वच्छ कर दिया ताकि ज्ञान-योग की क्लास कर सकूँ।

प्यारे बाबा का प्रथम पत्र

शाम के समय कुछ आत्माएँ ज्ञान सुनने आईं, अनुभव और साधनों का अभाव तो था ही, मैंने अंग्रेजी की पुस्तक (The Real Geeta) का हिन्दी अनुवाद करके सुनाना शुरू कर दिया। उसमें एक अध्याय था 'The Highest Education & Highest Status'. इसमें देवताई जीवन में प्राप्त होने वाले दो प्रकार के ताजों (पवित्रता का तथा प्रकाश का) का वर्णन था। मुझे महसूस होने लगा कि सत्य इतिहास तो यही है। इस लेख को मैंने कई बार पढ़ा। मेरी बुद्धि खुलती गई। दूसरों को भी इसी 'गीता' का अनुवाद सुनाता रहा कई दिन तक। फिर मैंने प्यारे बाबा को दिल के स्नेह से ओत-प्रोत कुछ इस प्रकार पत्र लिखा, **प्यारे बाबा, मैं कल्प पहले वाला आपका बच्चा हूँ, निराकार आत्मा हूँ, मेरे पास जल्दी ब्रह्माकुमारी बहन भेजो। मात्र चार दिन के बाद लाल अक्षरों वाला अलौकिक पत्र बाबा का मुझे मिल गया, लिखा था – आपको बहन भेज देंगे।**

जन-जन के विघ्न सेवा में

ब्रह्माकुमारी बहन तो हमारे पास पहुँच गई, दो-तीन दिन क्लास भी ठीक चली परन्तु नए विश्व की स्थापना के लिए दिए जाने वाले इस नए ज्ञान की कई बातों को जनता समझ नहीं पाई और हमारा विरोध होने लगा। मैं होस्टल का वार्डन था। सरकारी मकान में रहता था। मुख्याध्यापक ने मुझे कहा – सरकारी मकान में तुम यह सब क्लास आदि नहीं लगा सकते हो। इस कारण से अगले दिन से क्लास दूसरे भाई के घर लगने लगी। एक बार वहाँ से क्लास करके रात को साढ़े दस बजे जब लौटा और बिस्तर पर गया तो मन में विचार आया – लक्ष्मण, 182 रुपये तो तेरी तनख्वाह (Salary) है, उनमें से 100 रुपये तुम आत्म प्रकाश को दे देते हो, ऊपर से ब्रह्माकुमारी बहन को बुला लिया है, क्लास करने वाले सब भाग गए हैं, यह तूने क्या पंगा (झंझट) ले लिया है। यह विचार आते ही उस अर्ध-सुषुप्त, अर्ध-जागृत अवस्था में मुझे एक दृश्य दिखाई दिया – पीले सफेद प्रकाश का एक सूरज है, नीला गगन है, तारे ऊपर-नीचे आ-जा रहे हैं, मैं ओस भरी ठण्डी मखमली घास पर चल रहा हूँ और सूरज धीरे-धीरे मेरी आँखों के पास आता जा रहा है और फिर मुझे आवाज आई – **घबराओ मत, तेरा हाथ मेरे हाथ में है। आधे मिनट के इस दृश्य से मैं असीम आन्तरिक शक्ति, निश्चय और निश्चिन्तता से भरपूर हो गया।**

❖

बच्चे घबराना नहीं, बाप बैठा है

● ब्रह्माकुमार जनकराज, जालन्धर

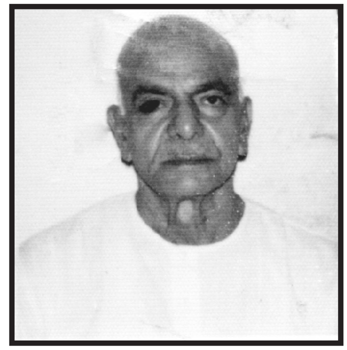

ईश्वर मिलन की चाह ने बहुत भक्ति करवाई, दर-दर भटकाया, बहुत व्रत भी रखे। दुर्गा माँ हमारे परिवार की इष्ट थी। योगाभ्यास भी बहुत किया पर आत्मा और परमात्मा की अनुभूति तो हुई नहीं। ब्रह्माकुमारी आश्रम के बारे में बहुत कुछ सुन रखा था। जब हमारी बस्ती में सेन्टर खुला तो दिल में आया कि सुनी हुई बातें छोड़ अंदर जा कर देखना चाहिए। मेरे मन में भ्रांति थी कि परमात्मा सर्वव्यापी है, और भी इसी प्रकार की कई भ्रांतियाँ थीं और पहले ही दिन बहनों से इस संबंध में बहस करना चाहता था परंतु एक शक्ति का साया मेरे ऊपर पड़ा। मुझे लगा कि कोई जबर्दस्ती मुझे बहस करने से रोक रहा है, मैं चाहते हुए भी कुछ बोल नहीं पाया। उसी समय बड़ी हैरानी के साथ मुझे विश्वास होने लगा कि यहाँ अवश्य कोई शक्ति काम कर रही है परंतु वह शक्ति स्वयं परमपिता परमात्मा ही हैं, यह विश्वास नहीं हो पा रहा था। ब्रह्माकुमारी विचारधारा में विश्वास न होते हुए भी एक बात यह थी कि बहनें जब शांति में बिठाती थी तो शांति बहुत मिलती थी। जैसे ही इनकी क्लास का समय होता था, दिल करता था कि जाकर योग में बैठूँ और बैठा ही रहूँ। मुझे यह निश्चय नहीं था कि ब्रह्मा के साधारण तन में भगवान अवतरित हुए हैं। इस प्रकार की स्थिति में कई मास चलते रहे।

एक बार प्यारे ब्रह्मा बाबा का दिल्ली में माथुर भाई की कोठी पर आगमन हुआ तो विचार चला कि शायद बाबा से मिलने पर कुछ अनुभव हो जाए। फिर हम बाबा से मिलने दिल्ली पहुँचे। बाबा को दूर से देखा, लगा कि व्यक्तित्व तो शानदार है पर देखें, अनुभव होता है या नहीं। इसके बाद बाबा अंदर कमरे में चले गए। पार्क में भाई-बहनों को लाइनों में बैठा दिया गया और भोजन परोस दिया गया। तभी एक गीत बजा, 'छोड़ भी दे आकाश सिंहासन इस धरती पर आ जा रे .... ।' बाबा कमरे से बाहर आये और संदली पर विराजमान हो गए। संदली के पास एक बुजुर्ग माता बैठी थी। बाबा ने उसका चेहरा अपने हाथों में ले, घुटने पर रखा और दृष्टि देते हुए उसके मुख में गिट्टी खिलाने लगे। मैं बाबा के एक साइड में ही बैठा था। यह दृश्य देख मेरे मन में एक प्रबल संकल्प उठा, हे भगवान, यदि आप इस ब्रह्मा तन में आए हुए हो तो यह माता तो बहुत-बहुत भाग्यशाली है। मैं तो आपसे थोड़ा परे जरा साइड में बैठा हूँ, आप मेरे को खिला तो नहीं सकेंगे पर एक नज़र मुझे देख तो लो। आपकी दृष्टि लेते-लेते मैं भी भोजन-पान कर लूँगा। गिट्टी मेरे हाथ में थी। यही संकल्प पुनः दोहराया, 'बाबा मेरे को एक नज़र देख तो लो।' तभी बाबा का चेहरा एकदम मेरी तरफ घूमा और प्रकंपनों का शक्तिशाली प्रवाह मुझसे टकराने लगा। मेरा तन थर-थर कांपने लगा, आँसुओं की धारा बह चली। मिनट भर बाबा दृष्टि देते रहे और मैं गिट्टी हाथों में ही पकड़े रहा। फिर बाबा उठे और कमरे में चले गए। मेरा चित्त भी बाबा के साथ ही चला गया और लगन लग गई कि पुनः बाबा से मिलना है।

बाद में, हमारे ग्रुप की बाबा से मिलने की बारी आई। युगल बोली, सुना है कि बाबा भाइयों और माताओं को गोद में लेते हैं, मैं तो नहीं जाऊँगी, पर पुरुष की गोद में जाना पाप है। मैंने कहा, मैं मजबूर नहीं करूँगा, जो आपका मन करे वही करना। बाबा से मिले तो बाबा की दृष्टि युगल को मिली, वह काँपते-काँपते उठी और बाबा की गोद में चली गई। बाद में मैंने पूछा, आप तो कहती थी, गोद नहीं लेनी, फिर आपको क्या हो गया था।

(शेष ..पृष्ठ 19 पर)

स्नेहमयी सरिता का महाप्रयाण

• ब्रह्माकुमारी सुमन, अलीगंज (लखनऊ)

जिसकी पालना स्वयं भगवान ने की हो; जिसे भगवान ने अपने हाथों से तराशा हो; स्वयं विधाता ने जिसके जीवन में रंग भरे हों; जिसे जानी-जाननहार, त्रिकालदर्शी, त्रिभुवननाथ ने ढूँढकर निकाला हो; पतित पावन परमात्मा करन-करावनहार ने स्वयं जिसे श्रेष्ठ कर्म करना सिखाया हो; भाग्यविधाता ब्रह्मा ने स्वयं अपनी लेखनी से जिसकी तकदीर की लकीर खींची हो; ज्ञान सागर ने जिसे स्वयं आकर पढ़ाया हो; प्यार के सागर प्रभु के अपार प्यार ने जिसे सिंचित किया हो; वरदाता सर्वशक्तिवान का वरदहस्त जिसके सिर पर हो; जिसके विवेक को स्वयं बुद्धेश्वर ने जागृत किया हो; जगतनियंता नव सृष्टि का रचयिता जिसका खुद गुरु बना हो; आदि पिता प्रजापिता ब्रह्मा बाबा एवं जगदम्बा सरस्वती की छत्रछाया में जिसकी जीवनचर्या रही हो; वह अद्भुत रचना भला कैसी होगी? जिसने स्वयं भगवान को अपनी आँखों से सृष्टि को रचते देखा, हर कर्म करते देखा ऐसी अति विशेष ते विशेष, श्रेष्ठ ते श्रेष्ठ, विधाता की अनुपम कृति थी आदरणीया सती दादी जी। उनकी कुछ विशेषताओं का वर्णन कर रही हूँ जो हमने अन्यत्र कहीं भी नहीं देखी। उनकी इन्हीं विशेषताओं और अनूठी पालना ने हमें भी एक समर्पित ब्रह्माकुमारी बना दिया।

अपार स्नेह – हमने उनके जीवन में यह सच साकार होते देखा कि स्नेह सब कुछ कर सकता है। पत्थर को भी पिघला सकता है व बिना किसी बंधन के भी जीवनपर्यन्त किसी को भी बाँध कर रख सकता है। आदरणीया सती दादी जी स्नेह का दरिया नहीं, नदी नहीं, अनन्त स्रोत थी। कोई भी हो, छोटा-बड़ा, अमीर-गरीब, भाई-बहन, पढ़ा-लिखा, गाँव की भोली-भाली बूढ़ी मातायें – वह नि:स्वार्थ स्नेह सब पर उडेलती थी। उनके लिए सभी 'सोना' व 'राजा' हुआ करते थे। कोई भी, कभी भी, कहीं से भी बिना समय बताए आया, आदरणीया दादी जी ने कभी भी यह नहीं कहा कि तुम इस समय क्यों आये? दादी जी बिना किसी को जगाये स्वयं उठती और गेट खोलकर पहले उससे पूछती कि तुमने कुछ खाया है। वह बोलता, दादी जी, खाया तो नहीं पर अब कुछ खायेंगे भी नहीं। तब दादी जी खुद ही रसोई में जाकर कुछ बनाकर ले आती और उसे आवाज़ देतीं कि अच्छा, यह थोड़ा-सा खा लो, फिर सो जाना। एक भाई जिसका दिमाग थोड़ा हलका था, वह कहीं से भी बुद्धिमान नहीं था पर दादी जी उसको भी राजा बेटा कहती थी, उसका भी उतना ही ख्याल रखती थी जितना अन्य लोगों का। सेन्टर पर जिसको जो अच्छा लगता, दादी जी उसके लिए वह चीज़ ध्यानपूर्वक रख लेती थी। दूसरे सेन्टर

पर वह चीज़ होती तो वहाँ से भी ले आती थी।

विशाल हृदय – किसी ने, किसी को भले ही ठुकराया हो पर दादी जी ने सभी को दिल में शरण दी। कभी भी किसी से नाराज़ नहीं हुई। गलतफहमी में आकर किसी ने उनको कुछ भी बोला हो पर वो तुरंत उसे क्षमा कर देती, कभी किसी की बात दिल में नहीं रखती थी। हमने देखा, गाँव की मातायें आकर उनके बिस्तर पर बैठ जाती थीं पर दादी जी कभी किसी को कुछ भी नहीं कहती थी। कोई गरीब कुछ भी, कितना भी लाया, वह बाबा की प्रतिनिधि बनकर, स्नेह से स्वीकार करती थी और दिल से प्रयोग करती थीं, फेंकती नहीं थीं। एक बार कुछ मातायें सस्ती, मोटी व सख्त तोरई व लौकी ले आई थीं। हम लोगों ने कहा, ये ठीक नहीं हैं, नहीं खायेंगे। दादी जी ने कहा, बाबा ने भेजी हैं, ठुकराना ठीक बात नहीं है, बेचारे गरीब लोग हैं, दिल से लाये हैं।

अनुपम त्याग – जीवन के किसी भी दौर में उन्होंने इच्छायें नहीं रखीं। हम

लोग कई बार कहते थे, दादी जी, यह चीज़ ठीक नहीं, अब आप इसका प्रयोग मत करो। दादी जी कहती थी, जो बाबा हमें देता है, हमें दिल से उसे स्वीकार करना चाहिए। हमने वैराग्य को चुना है, न कि मौज-मस्ती की जीवन को। उन्होंने कभी भी अपने लिए कुछ भी नहीं खरीदा, न खाने के लिए, न पहनने के लिए, न ओढ़ने के लिए। शरीर पर भी कुछ खर्च नहीं किया। कभी कपड़े प्रेस नहीं किये होंगे, अगर किसी बहन ने कर दिये तो ठीक, नहीं तो वे तह करके बिस्तर के नीचे रख लेती थी और पहन लेती थीं। कई बार गाँव की सेवाओं में गई, वहाँ सुविधाएँ नहीं होती थीं, फिर भी पूरा समय हम सबके साथ रहती थी। कई बार थकावट के कारण बुखार भी हो जाता था, फिर भी कोई सेवा के लिए प्यार से कहता तो दादी जी ना नहीं कहती थीं।

इकॉनामी का अवतार – उन्होंने कभी कुछ खराब नहीं होने दिया। खराब चीज़ को भी अच्छा बनाया। कभी भी कुछ फेंका नहीं। उन्होंने शायद ही जीवन में कभी रिक्शा किया हो। हम कहते थे, दादी जी, रिक्शा कर लेते हैं, दूर तक जाना है, तो कहती थी, नहीं, बाबा को याद करते मैं तुम्हें शार्टकट रास्ते से ले चलती हूँ, फिजूल पैसे नहीं खर्च करने चाहिएँ। मितव्ययता तो जैसे उनकी रग-रग में थी। दिन भर में कई कि.मी. पैदल चलती थी। सन् 1996 तक उन्होंने कोई दवाई भी नहीं

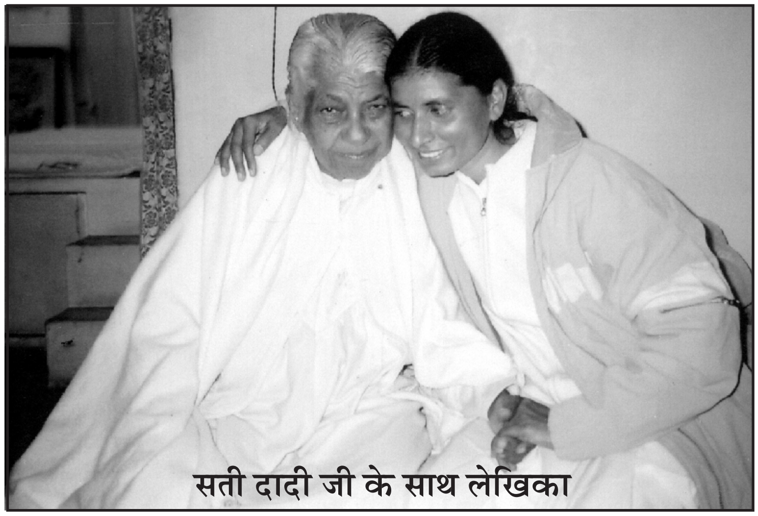

सती दादी जी के साथ लेखिका

खरीदी थी। वे कहती थी, सिरदर्द में, पेट दर्द में बाबा को ठीक से याद करो, ठीक हो जायेगा।

बेजोड़ प्रतिभा की धनी – सिंधी, हिन्दी, इंग्लिश का उन्हें अच्छा ज्ञान था। वे अच्छा गा भी लेती थीं। पाक कला में वे निपुण थीं ही। दादी जी को कहीं भी, कभी भी बोलने के लिए कोई कहता था तो वे बिना किसी कहानी व उदाहरण का आधार लिए किसी भी शब्द से शुरू कर देती थीं। उनका शब्दों पर अद्भुत नियंत्रण था। वे किसी भी शब्द के अनुरूप दसियों शब्द बना देती थीं। वे कभी भी खाली नहीं बैठती थीं। समय मिलने पर दिन में ही 17-18 मुरलियाँ पढ़ लेती थीं और उनके नोट्स बनाती थी। उन्हें सारी प्वाइंट्स याद भी रहती थीं। क्लासेज में जाकर बिना देखे सब सुना देती थीं। वह कुछ भूलती नहीं थीं। बुलंद आवाज़ थी। कहती थीं, अगर माइक न चले तो छोड़ो। बिना माइक के उनकी वाणी सबको उमंग-उत्साह में ला देती थी।

बेहद एक्टिव एवं अलर्ट – आलस्य तो दादी जी को दूर-दूर तक छू भी नहीं सका। उन्होंने कभी भी कोई ब्राह्मणी व सेवाधारी नहीं रखा जब तक कि उनके शरीर ने साथ दिया। सेवा में दादी जी हमेशा समय से पहले पहुँचती थी। किसी भी सेवा के लिए तुरंत तैयार हो जाती थीं। अपना काम फटाफट करती थी। दो बजे उठकर, बाबा का भोग स्वयं बनाकर, 6 बजे से पहले ही क्लास में बैठ जाती थीं। जो कुछ कहती थी, पहले करके दिखाती थीं। उन्होंने कभी भी अपने को बूढ़ा नहीं समझा। बिना किसी का साथ व सहारा लिए फटाफट पैदल चलती थीं। अस्सी वर्ष की आयु में भी उनका उत्साह देखते ही बनता था। उनके उमंग को देखकर बूढ़ों में जोश आ जाता था।

बच्चों जैसी सरलता व निर्माणता – उन्होंने कभी भी अपना अभिमान नहीं दिखाया। बड़ी दादियों ने जो

कहा, जहाँ जाने को कहा, तुरंत तैयार हुईं। मधुबन में भी जाती थी तो कोई साधन व सुविधा कभी नहीं लेती थी। कभी हम कहते थे, दादी जी, वो वाला गीत सुनाइये, तो दादी जी तुरंत सुनाने लगती थी। किसी से ईर्ष्या, नफरत कभी भी नहीं किया। किसी का भी क्लास हो, दादी जी सबसे पहले जाकर स्टूडेंट की तरह बैठ जाती थीं।

एक बल एक भरोसा – हमें एक माता जी बता रही थी कि **एक बार सेन्टर पर सब डिब्बे खाली हो गये थे, कुछ भी खाने को नहीं था पर दादी जी ने किसी से भी नहीं कहा और न ही चेहरे से किसी को पता पड़ने दिया। उसी लगन व खुशी से सेन्टर के सारे कार्य करती रहीं। उसी दिन एक माता ध्यान में गई तो बाबा ने उसे रसोई के खाली डिब्बे दिखाये। वह ध्यान से उतरकर सीधी रसोई में गई। जब डिब्बों को खोलकर देखा तो दादी जी के प्रति उसके मन में अपार श्रद्धा हो गई कि ये महान त्यागी देवी हैं। हमने कभी दादी जी को किसी से माँगते नहीं देखा। मधुबन यज्ञ उनको हमेशा याद रहता था। वे अपने लिए कुछ नहीं रखती थी। बिना किसी दिखावे के, चुपचाप दादी कॉटेज में जाकर आदरणीया बड़ी दादी जी के हाथ में दे आती थीं। पहले बाबा, मधुबन फिर कुछ और। हमेशा बाबा को ही आधार बनाया, उसी का भरोसा रखा।**

सादगी की प्रतिमूर्ति – दादी जी के जीवन में कोई बनावटीपन व दिखावा नहीं था। उनकी हर चीज़ में सादगी थी। भोजन में भी सादगी, कभी भी दस चीज़ें नहीं। बचपन में वो ऐसे समाज में थी जहाँ खान-पान अति विशेष रहता है पर दादी जी को ज़रा भी शौक नहीं था। वे सबकी दादी थी क्योंकि सबके लिए उनका दिल खुला था। सब उनको बुला सकते थे बिना किसी ताम-झाम के। वे सिर्फ सेवा के लिये समर्पित थीं।

लखनऊ की शान – जो भी उनके सान्निध्य में आया उनका प्रशंसक बन गया क्योंकि उनका स्नेह ही ऐसा था। राजनेता, धर्मनेता या शिक्षा जगत की कोई हस्ती हो, सब पर उन्होंने अमिट छाप लगाई। किसी कार्यक्रम में उन्हें भले 5 मिनट ही बोलने को मिले पर वे बोलती थी तो सारे भाषणों को फीका कर देती थीं। चंद शब्दों में सबका सार दे देती थीं। लखनऊ उनका कर्मक्षेत्र बना इसलिए उन्होंने लखनऊ के किसी भी क्षेत्र और वर्ग को सेवा से वंचित नहीं रहने दिया। लखनऊ में दादी जी के पहले सभी बड़ी दादियों का भी अनमोल सहयोग रहा। साकार बाबा-मम्मा की पालना भी लखनऊ को मिली परंतु जो सेवा का विस्तार हुआ वह सती दादी जी ने ही किया।

सती दादी जी पिछले लगभग एक वर्ष से बीमार थी। उनका ब्रेन काम नहीं करता था पर उनके अंदर इतना स्नेह पैदा हो गया था कि जो भी उनके सामने जाता वह लौटने का नाम नहीं लेता। सबको वे टोली देतीं और साथ में एक सेब देती थीं। हम भी जब जाते थे, दादी जी बड़े स्नेह से मिलती थीं। बड़ा आश्चर्य लगता था, किसी को भी वे नहीं पहचानती थीं पर मम्मा-बाबा व बड़ी दादी जी का फोटो देखते ही पहचान जाती व कहने लगती – दादी-बाबा-मम्मा। वे अपने पास से लौटने नहीं देती, छोटे बच्चे की तरह पकड़ कर बड़ा प्यार करती थी जिससे बार-बार मिलने का दिल करता था। करीब सात महीने दादी जी काफी बीमार रहीं पर चेहरे से कभी बीमार नहीं दिखीं। जब आँखें खोलती थीं तो बड़े प्यार से सबको दृष्टि देती थीं। अगस्त 25, 2007 को बड़ी दादी जी ने शरीर छोड़ा था। अक्तूबर 25, 2008 को सती दादी जी ने अपना पुराना शरीर छोड़ दिया।

कोई कितनी भी अच्छी पालना देता हो पर साकार की पालना लेने और वैसी पालना देने वालों की बात ही कुछ और है। वह निःस्वार्थ प्यार व अपनापन अतुलनीय है। लखनऊ में शुरू में तीन दादियाँ थीं, भगवती दादी, किशनी दादी, सती दादी। अक्तूबर 25, 2008 को लखनऊ साकार के स्नेह से खाली हो गया। दादी जी ने हम सबके लिए बहुत कुछ किया और हम लोगों से कुछ भी नहीं लिया। हम उसका रिटर्न कर भी नहीं पाये। दादी जी के जाने के बाद लगता है कि न भरने वाली एक जगह खाली हो गई है। हमारा एक मजबूत आधार चला गया है। ऐसी अनुकरणीय, अतुलनीय, वंदनीय माँ पाकर भला कौन नहीं अपने भाग्य पर गर्व करेगा।

दादी जी, हम आपके बहुत ही ऋणी हैं और सदा रहेंगे, आपकी असीम अनुकम्पा से ही आज हम यहाँ पर हैं। आपके बिना हमारे जीवन को कोई बना नहीं सकता था। लौकिक माँ भी हमारी कोई कम स्नेह नहीं करती थी पर आपके नि:स्वार्थ स्नेह के आगे वह बहुत ही फीका हो गया। दादी जी, हम तो क्या, सारा लखनऊ ही आपका ऋणी रहेगा और सदियों तक रहेगा। ऐसी महान विभूति, पुनीत आत्मा, शीतल हृदय वाली, क्षमाशीलता की देवी, निर्माणता व सरलता की अद्वितीय हस्ती, विद्वता की पराकाष्ठा, सादगी एवं सौम्यता से परिपूर्ण, ममतामयी माँ! आपको मेरा कोटि-कोटि नमन स्वीकार हो।

❖

बच्चे घबराना नहीं.....पृष्ठ 15 का शेष

युगल बोली, दृष्टि मिलते ही मन में संकल्प उठने लगे कि सच्चा पिता यही है, तो सच्चे पिता की गोद में जाने से खुद को रोक ही नहीं पाई। बाबा ने हम बच्चों को कहा, बाबा का घर मधुबन है, आप वहाँ आना। कुछ मास बाद हम मधुबन (आबू पर्वत स्थित ब्रह्माकुमारी मुख्यालय) पहुँचे। पहले दिन क्लास में जाते ही युगल को साक्षात्कार हो गया। संदली पर बैठे ब्रह्मा बाबा श्रीकृष्ण के रूप में दिखाई दिए। सतगुरुवार को शिव बाबा को भोग लगा। बाबा ने अमृत पिलाया। फिर बाबा क्लास रूम से बाहर जाने के लिए संदली से उठे। संदली पर गुलाब का फूल पड़ा था। मेरे मन में संकल्प आया, बाबा, क्या ही अच्छा हो, यदि मुझे बुलाकर, आप यह फूल मुझे देते जाएँ। बाबा मुड़े, फूल उठाया और बोले, यह लो बच्चे अपना फूल। मन खुशी से भर उठा। आठ दिन मधुबन में रहे, खूब आनन्द लूटा। मेरे सारे संकल्प पूरे होते रहे। विदाई की घड़ी आ गई, मन उदास हो गया। गीत बज रहा था – 'तेरी दुनिया से दूर, चले होके मजबूर, हमें याद रखना ...।' फिर बाबा की गोद में जाते ही जैसे आँसुओं का सैलाब ही उमड़ पड़ा। गले से लगाए बाबा पीठ थपथपाने लगे, बोले, बच्चे, बाप बैठा है, घबराना नहीं। जीवन में अनेक परिस्थितियाँ आईं पर बाबा का बोल 'बच्चे घबराना नहीं, बाप बैठा है', सदा हिम्मत और उत्साह देता रहता है। अभी भी प्यारे बाबा के साथ और साए का अनुभव होता ही रहता है। ❖

जे.वाटूमल ग्लोबल हॉस्पिटल एण्ड रिसर्च सेन्टर, माउंट आबू, राजस्थान में विशाल यूरोलॉजी ऑपरेशन कार्यक्रम

दिनांक : 5 फरवरी से 8 फरवरी 2009 तक **रजिस्ट्रेशन की अंतिम तारीख** : 31 जनवरी, 2009

अमेरिका के प्रसिद्ध यूरोलॉजिस्ट **डॉ. सक्ति दास, M.D., F.R.C.S. (Edin), F.R.C.S. (C), F.A.C.S.** एवं अपोलो हॉस्पिटल, अहमदाबाद के **डॉ. दर्शन के. शाह, M.S., M.Ch. (Urology)** एवं ग्लोबल हॉस्पिटल के **डॉ. संजय कुमार वर्मा, M.S.** के द्वारा विभिन्न मूत्र संबंधी बीमारियों की जाँच एवं दूरबीन द्वारा ऑपरेशन

निम्न लक्षण वाले रोगी इस कार्यक्रम में अवश्य पधारें :

गुर्दे, मूत्रनली एवं मूत्राशय की पथरी प्रोस्टेट ग्रंथी की शिकायत (पेशाब बार-बार आना, टपकना, पेशाब में जोर लगाना, रात को बार-बार पेशाब आना इत्यादि) जन्मजात मूत्र संबंधी रोग (हाइपोस्पेडियास)

सभी के लिए नि:शुल्क सलाह, समर्पित भाई-बहनों तथा गरीब एवं नि:सहाय मरीजों के लिए नि:शुल्क ऑपरेशन की सुविधा (बी.पी.एल. कार्ड साथ लावें)

सीमित संख्या, रजिस्ट्रेशन – पहले आयें, पहले करायें (On First Come first basis)

ऑपरेशन के इच्छुक मरीज कृपया अपनी सभी जाँच रिपोर्ट लेकर संपर्क करें –

डॉ. संजय कुमार वर्मा, एम.एस. (सर्जरी), सर्जरी विभाग, ग्लोबल हॉस्पिटल एण्ड रिसर्च सेन्टर, माउंट आबू, राजस्थान

फोन : (02974) 238347, 238348 **फैक्स** : (02974) 238570

ई-मेल : sanjayvarma780@yahoo.co.in, ghrc @vsnl.com, ghrcabu@gmail.com

सुधा को मिला सुधा का सागर

• ब्रह्माकुमारी सुधा, बुरहानपुर

ज्ञानामृत के सागर परमपिता परमात्मा शिव की अनेक लीलाएँ ब्रह्मा द्वारा देखने तथा अनुभव करने का परम सौभाग्य सुधा बहन जी को प्राप्त है। आपका त्यागी और योगी जीवन अनेक आत्माओं के लिए प्रेरणास्पद रहा है। आपकी मधुर वाणी और सरल व्यवहार सहज ही मनुष्य के मन को हर लेता है। आपने वरदाता शिव परमात्मा से अनेक वरदानों को प्राप्त करके स्वयं को भरपूर किया है। आपने हज़ारों मनुष्यात्माओं का प्रभु से मिलन करा कर उनके जीवन को श्रेष्ठ बनाया है। वर्तमान समय आप बुरहानपुर में ईश्वरीय विश्व विद्यालय की ज़िम्मेवारियों को संभालते हुए सेवारत हैं। प्रस्तुत हैं सुधा बहन जी के अलौकिक अनुभव उन्हीं के भावों में।

– ब्रह्माकुमारी मंगला, बुरहानपुर

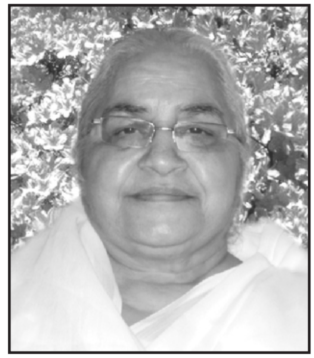

मेरा लौकिक जन्म सन् 1942 में अमृतसर के एक धार्मिक तथा सम्पन्न परिवार में हुआ। माता-पिता की भक्ति भावना के प्रभाव से बचपन से ही मुझे भक्ति का शौक था, जिससे सदा भगवान से मिलने की लगन रहती थी। लौकिक माता जी के साथ लक्ष्मी-नारायण के मंदिर में जाकर पूजा-आरती भी करती थीं। घर में समय-प्रति-समय साधु गंगेश्वरानंद जी तथा सर्वानंद जी आकर सत्संग करते थे।

बाद में हमारा परिवार दिल्ली में स्थानान्तरित हुआ। एक दिन लौकिक माता जी, अपनी लौकिक चाची के आग्रह से ब्रह्माकुमारी आश्रम पर गई, माता जी को वहाँ ईश्वरीय ज्ञान अच्छा लगा। वह अपनी रुचि से ज्ञान मुरली सुनने के लिए नियमित आश्रम पर जाने लगी।

साक्षात्कार द्वारा दिव्य जन्म

एक दिन मेरे लौकिक पिता जी ने मुझे माता जी को बुलाने के लिए आश्रम पर भेजा। जब मैं आश्रम पहुँची तो वहाँ योगाभ्यास चल रहा था। क्लास रूम में स्टेज पर ब्रह्माकुमारी बहनें (दीदी मनमोहिनी, रुक्मिणी दादी, चन्द्रमणि दादी) बैठी हुईं थीं। मैं भी उस सभा में पीछे शान्ति से बैठ गई। दो-तीन मिनट के बाद अचानक मैं ध्यान में चली गई तो देखा कि स्वर्ग में श्रीकृष्ण जी गोपियों के साथ रास कर रहे हैं, वे मुझे अँगुली के इशारे से रास करने के लिए बुला रहे थे। मैं भी उनके साथ रास करने लगी। लगभग एक घण्टे तक मैं ध्यान में ही थी। जब ध्यान से नीचे आई तो देखा कि मैं चन्द्रमणि दादी जी की गोदी में हूँ। तब मेरी उम्र 8 वर्ष की थी। उस साक्षात्कार के बाद मेरा झुकाव आश्रम की तरफ बढ़ने लगा। मेरे साथ मेरी छोटी बहन (रानी बहन जो अभी मुजफ्फरपुर में ईश्वरीय सेवारत हैं) भी आश्रम पर आने लगी। मुझे बार-बार संकल्प चलता था कि मुझे भी बहनों जैसा श्रेष्ठ जीवन बनाना है। मैं नियमित मुरली क्लास करने लगी।

मैंने बाबा को पत्र लिखा

एक पत्र मैंने बाबा को लिखा कि हम दोनों बहनों की आपसे मिलने की तीव्र इच्छा है, आशा है आप हमें स्वीकृति देंगे। ठीक एक सप्ताह के बाद लाल अक्षरों वाला हस्तलिखित पत्र मिला। बाबा ने लिखा – मीठी बच्ची, अनुकूल समय अनुसार जब चाहो बाबा से मिलने आ सकती हो। पत्र पढ़ते ही मैं आनन्द विभोर हो गई और मेरे नयन गीले हो गये। हम दोनों बहनों को बेहद खुशी हुई।

मातेश्वरी जी तथा बाबा से मेरी प्रथम मुलाकात

सन् 1954 में हम दोनों बहनें और लौकिक माता जी, रुक्मिणी दादी जी के साथ मातेश्वरी जी तथा बाबा से मिलने आबू पर्वत पर गए। पहले मातेश्वरी जी से मुलाकात हुई। मातेश्वरी जी का व्यक्तित्व अद्भुत तथा ओजस्वी था। यज्ञ माता की

जिम्मेवारी मिलने पर सदा वह वत्सों पर वात्सल्य बरसाती रहीं। उनको देखते ही मुझे प्रेम और शांति की अनुभूति हुई।

तत्पश्चात् दादी जी ने हमें बाबा से मिलाया। हम दोनों बहनों को देखते ही बाबा ने कहा – **ये दोनों यज्ञ से बिछुड़ कर गई हुईं आत्माएँ हैं, जो अभी बाबा के पास आ गईं। सचमुच, बाबा का व्यक्तित्व अद्वितीय था! देखने से ऐसा लगता था कि करोड़ों में खोजने पर भी ऐसा व्यक्ति नहीं मिलेगा। उनका मुस्कराता हुआ चेहरा, दिव्य ज्योतियुक्त आँखें, मीठी-मीठी बातें, सहज व्यवहार ने तो मेरा मन हर लिया था। बाबा के व्यक्तित्व में इतनी कशिश थी कि हमें बार-बार चुम्बक की तरह उनके सम्मुख खींच ले जाती थी। गायन है कि ''तुम्हीं संग खाऊँ, तुम्हीं संग बैठूँ ..'', यह अनुभव व्यक्तिगत तौर पर हर मिलन में मुझे ही नहीं हरेक को होता था।**

जब बाबा अव्यक्त हुए, तब मैं ग्वालियर सेवाकेन्द्र पर थी। समाचार सुनते ही मुझे बहुत धक्का लगा और तब मुझे पिताश्री जी के साथ बीते हुए वे मधुर क्षण बहुत-बहुत याद आये और उनका वह आत्मिक स्नेह भी, जो मुझे मिला था.....!

मैंने बाबा में क्या-क्या देखा?

बाबा ड्रामा के ज्ञान को यथार्थ प्रयोग में लाते थे : बाबा पास्ट के लिए ड्रामा कहने के बाद एकदम निरसंकल्प हो जाते थे। बीती हुई बात के बारे में एक भी संकल्प न चला कर समय व्यर्थ नहीं गंवाते थे। बाबा कहते थे, **जब पास्ट को बिंदी लगाते हैं तो वर्तमान में सुंदर रचना दिखाई देती है; जिससे भविष्य के लिए और भी अच्छे प्लान बुद्धि में चलते हैं।** ड्रामा को यथार्थ प्रयोग में लाने वाले कहेंगे कि मीठा ड्रामा, लवली ड्रामा, वण्डरफुल ड्रामा। अगर सिर्फ ड्रामा कहेंगे तो समझो मजबूरी से समय अनुसार गाड़ी को ब्रेक लगाई है।

सदा बच्चों को दिव्य गुणों से शृंगारने में व्यस्त : वे बच्चों को सदा मुस्कराते और खिले हुए फूलों के रूप में ही देखना चाहते थे। उनकी मीठी-मीठी बातें, सरल व्यवहार सबका मन मोह लेते थे। पाँच विकारों की शिकार आत्माओं को उन्होंने विकारों का ही शिकार करने की सहज युक्तियाँ बता दी थीं। बाबा की विलक्षण बुद्धि जहाँ सम्मुख खड़े व्यक्ति की जन्मपत्री एक सेकण्ड में ही जान लेती थी, वहीं दूसरी ओर बाबा के गम्भीर चेहरे से, अन्दर लहरा रहे सागर की तरंगों का संकेत मात्र भी न मिलता था।

बाबा एक दिव्य मशाल थे : वे एक ऐसी दिव्य मशाल थे जिसके स्पर्श मात्र से ही अनगिनत बुझे हुए चैतन्य दीपक दिव्य एवं अलौकिक आभा से जगमगा उठते थे। सत्य और अहिंसा का मार्ग प्रशस्त हो उठता था। संसार सागर में मानवता के लड़खड़ाते हुए कदमों का वे एकमात्र सहारा थे।

बाबा ने हमें कर्मयोग सिखाया: ब्रह्मा बाबा को मधुबन में जब भी चलते-फिरते देखते थे, वे अव्यक्त फ़रिश्ता नज़र आते थे। चारों ओर दिव्य प्रकाश की रश्मियाँ फैलती हुईं दिखाई देती थीं। बाबा कभी धोबीघाट की सेवा में, कभी सब्जी काटने में या अनाज साफ़ करने में, बच्चों का उमंग बढ़ाने के लिए सहयोग देते थे। बच्चों से पूछते थे कि किसके यज्ञ की सेवा कर रहे हो और शिव बाबा की याद दिलाते थे। बच्चे, बाबा में माता का तथा पिता का रूप देखते थे। चलते-फिरते ज्ञान की बातों पर मनन कैसे करें, यह भी बाबा सिखाते थे।

बाबा शान्ति के सागर थे : बाबा के सान्निध्य में पहुँचते ही अपार शान्ति का अनुभव होता था जिससे मन स्वतः ही शान्त हो जाता था। अनेक बार हमने देखा कि कई भाई-बहनें बाबा से प्रश्न पूछने के लिए जाते थे परन्तु शान्ति के सागर की दृष्टि बाबा के माध्यम से उन पर पड़ते ही संकल्प तक शान्त हो जाते थे। उन्हें हल स्वयं ही मिल जाता था। बाबा से पूछने की आवश्यकता ही नहीं रहती थी।

आज भी पिताश्री जी की यादगार तपोभूमि मधुबन (आबू पर्वत) में पहुँचते ही मन अनायास ही इस दुनिया से दूर, बहुत दूर, एक असीम शान्त वातावरण में स्थायी शान्ति का अनुभव करता है। शान्ति स्तम्भ के पास पहुँच कर थकी-माँदी रूह को राहत मिल जाती है। ईश्वरीय शान्ति का अनुभव कैसा निराला है!

बाबा ने मुझे वरदान दिया था कि ''**यह बच्ची बहुत तकदीरवान है। बाबा की उम्मीदवार बच्ची है, यह बहुत सेवा करेगी। मीठी बच्ची, यह**

यज्ञसेवा ही सर्वोत्तम सेवा है, इस ईश्वरीय सेवा का अवसर किसी विरले भाग्यशाली को ही मिलता है। आप बहुत खुशनसीब हो, जो यज्ञ सेवा कर रही हो।'' मुझे अमृतसर में दादी जानकी जी, निर्मलशान्ता दादी जी तथा चन्द्रमणि दादी जी के साथ रहकर ईश्वरीय सेवा करने का सौभाग्य भी प्राप्त हुआ। बाद में बटाला, आगरा, ग्वालियर सेवाकेन्द्रों पर सेवा की।

सेवा में बाबा की मदद मिलती रही

वर्तमान समय मैं बुरहानपुर में ईश्वरीय सेवा पर उपस्थित हूँ। ईश्वरीय सेवा करते समय मुझे कई विचित्र अनुभव हुए हैं। शुरू-शुरू में ज्ञान की बातें मेरी समझ में इतनी नहीं आती थीं। किसी को ज्ञान समझाना शुरू करती थी तो ऐसा अनुभव होता था कि बाबा मुझे विशेष शक्ति देकर सेवा करा रहे हैं। जब कभी बड़ी सभा में भाषण करती थी तो ऐसा लगता था कि कोई अद्भुत शक्ति मुझे मदद करके जाती है।

वर्तमान समय बुरहानपुर में विभिन्न वर्गों की बहुत अच्छी सेवाएँ चल रही हैं। बाबा का रूहानी बगीचा वृद्धि को पा रहा है। सेवा क्षेत्र में बहुत बातें आती हैं फिर भी डबल लाइट रहकर सदा उड़ती कला की अनुभूति करती रहती हूँ।

बाबा का बनने के बाद आगे बढ़ने के लिए मैंने अपने जीवन में कुछेक सिद्धाँत बनाए हैं जैसे कि **मुझे सभी से कुछ-न-कुछ सीखकर गुण उठाना है, जीवनभर विद्यार्थी बनकर रहना है, सेवा में व्यस्त रहते हुए योगाभ्यास पर विशेष ध्यान देना है, फालतू बातों में समय वेस्ट नहीं करना है, बाबा की जो सेवा मिली है वह दिल से करनी है, कितनी भी कठिन परीक्षाएँ आयें लेकिन धैर्य से, बाबा की याद से उनको पार करना है।** इन सभी बातों पर ध्यान देने से लक्ष्य की ओर अग्रसर होने में बहुत मदद मिली है।

अभी विशेष अमृतवेले योगाभ्यास द्वारा बाबा से सुख और शान्ति लेकर अनेक आत्माओं को देने का पुरुषार्थ करती हूँ। ब्रह्मा बाबा के ऊँचे आदर्शों को जीवन में उतारने पर ध्यान देती हूँ। अब यही लक्ष्य रहता है कि समय की तीव्रगति अनुसार पुरुषार्थ की गति को तेज़ करके सम्पूर्णता की मंज़िल पर विजय का झण्डा लहराएँ और बाप को प्रत्यक्ष करने के कार्य को सम्पन्न करें।

❖

ब्रह्मा बाबा पुन: आ जाओ

ब्रह्माकुमार अवनीश रेनुकूट, सोनभद्र (उ.प्र.)

लेखराज से तुम ब्रह्मा, ब्रह्मा से बने फ़रिश्ता।
धर्मपिता तुम सृष्टि के इतना गहरा रिश्ता।।
वक्त नहीं कोई ऐसा जब आप याद ना आओ।
ओ मेरे ब्रह्मा बाबा, पुन: आप आ जाओ।।
पत्थर और पहाड़ों पर तूने अमृत बरसाया।
तेरी त्याग-तपस्या से वह मधुबन कहलाया।।
दुनिया के हर कोने से लोग यहाँ पर आते हैं।
देख तेरी इस रचना को विश्वास नहीं कर पाते हैं।।
आबू की हर ईंट-ईंट में तेरा खून-पसीना है।
तेरे कदमों पे चलना, नाम इसी का जीना है।।
सबसे पहले उठते थे तुम सबसे पीछे सोते
बच्चों खातिर जाग-जाग ज्ञान-बीज तुम बोते
ब्रह्मा के उस मधुबन में दुनिया का हर धाम
एक बार भी जाने से बन जाये हर काम।।
कुटिया ब्रह्मा बाबा की सबका दिल हर्षाये।
हिस्ट्री हॉल और शान्ति स्तंभ सबके मन को भाये।।
दिवस अठारह, मास जनवरी तेरी याद दिलाये।
इस दिन को वत्सों की टोली तुझको भोग लगाये।।

नववर्ष से नवयुग की ओर

• ब्रह्माकुमारी अनुसूइया, उत्तम नगर (दिल्ली)

नववर्ष के आगमन पर चारों ओर हर्ष-उल्लास और उमंग-उत्साह का वातावरण बन जाता है। 'पूरा साल मंगलमय हो' – लोग एक-दूसरे को इस प्रकार की शुभकामनाएँ देते हैं। सज्जन प्रवृत्ति के व्यक्ति नववर्ष पर कुछ अच्छे संकल्प भी करते हैं जैसे, **पूर्व में की गई गलतियों से सीख लेते हुए उन्हें दोबारा ना दोहराने का प्रण एवं भविष्य में यथा सामर्थ्य लोक-कल्याण हेतु कुछ नया करने का प्रण।** परंतु नववर्ष के दो-चार दिन व्यतीत होते ही मुबारकबाद और बधाइयों का सिलसिला बंद हो जाता है और नवीनता के उमंग-उत्साह की लहर भी समाप्त प्राय: होकर जीवन पूर्ववत् हो जाता है।

हम सभी देखते और सुनते हैं कि हर वर्ष भविष्यवक्ता और ग्रह-नक्षत्रों के ज्ञाता समस्त मानव समाज के लिए मंगल कामना करते हैं फिर भी दिन-प्रतिदिन अमंगल की छाया गहरी हो रही है। मानवता और इंसानियत की हार होती जा रही है। सामाजिक हालात बद से बदतर होते जा रहे हैं। किसी भी समय कहीं भी गोलियों व बम धमाकों का शोर, निर्दोषों का बहता खून, दीन-हीनों की चीत्कार, दवा के अभाव में दम तोड़ती जिंदगियाँ, दिन-दहाड़े अपराधों का बढ़ता आकार हमें सोचने पर बाध्य कर रहा है कि आखिर यह समाज इतने वेग से पतन की ओर क्यों जा रहा है? जीवन-मूल्य क्यों बदलते जा रहे हैं? कुछ नया करने की सोच, कुछ नये आविष्कार हमें इंसानियत से कई मील दूर क्यों कर देते हैं? आखिर कब रुकेगा यह समय परिवर्तन का चक्र या कब होगा सचमुच का मंगलमय समय?

मानव स्वभाव ऐसा है कि वह सत्य किन्तु विचित्र बातों को सुनना पसंद करता है परंतु सहजता से विश्वास नहीं कर पाता है। **आज आपको नववर्ष के शुभ अवसर पर एक ऐसे विचित्र किंतु अटल सत्य से परिचित करवा रहे हैं जिसको जानने और भरोसा करने से आप आश्चर्यानन्द से गद्गद हो उठेंगे और आपके अपने जीवन का आध्यात्मिक जागरण होकर अलौकिक परिवर्तन होगा। आप अपने आस-पास हर क्षण नई सुबह का उजाला महसूस करने लगेंगे और आपको अपने जीवन का लक्ष्य स्पष्ट दिखाई देने लगेगा।**

विचित्र परंतु अटल सत्य यह है कि आने वाला समय सिर्फ वर्ष-परिवर्तन का ही नहीं बल्कि युग परिवर्तन की वेला है। सृष्टि ड्रामा का पूरा चक्र समाप्त होने वाला है। इस समय कलियुग अंत के सभी लक्षण अपनी चरम अवस्था पर पहुँच चुके हैं। कलियुग के लिए कहा गया है कि गौएँ विष्ठा खाएंगी, कन्याएँ अपने मुँह से वर माँगेंगी, शादी से पूर्व गर्भ-धारण शुरू हो जायेगा, बालों का शृंगार होने लगेगा, माता-पिता एवं वृद्धजनों का तिरस्कार होने लगेगा, रिश्वत, कालाबाज़ारी और अपराधों की भरमार होगी, घरों में तालों के बावजूद कोई सुरक्षा नहीं रहेगी, एक-एक इंच ज़मीन के लिए भाई-भाई का दुश्मन बन जायेगा – ये सभी लक्षण कलियुग के अंत का मूक संदेश दे रहे हैं।

कलियुग के समापन के बाद सतयुग का शुभारंभ होने वाला है। समय का पहिया बहुत तेज़ रफ़्तार से नई दुनिया,नये युग के रोशन उजाले की ओर जा रहा है। **वर्तमान समय, जिसे हम कलियुग और सतयुग के बीच का संगमयुग कहते हैं, गुप्त रूप में विश्व परिवर्तन की कल्याणकारी घटना को अपने में समाए हुए है।**

जैसे रात्रि बारह बजे के बाद दूसरा दिन शुरू हो जाता है परंतु उस समय भी रात्रि के सभी लक्षण और अंधकार अपनी चरम अवस्था पर

होते हैं। चार बजे के आस-पास अंधकार थोड़ा-थोड़ा छंटना शुरू होता है परंतु पूरा दिन तो छह बजे के आस-पास ही निकलता है। चार बजे के समय को ब्रह्ममुहूर्त कहा जाता है। यह समय पिछली रात्रि और नई सुबह के बीच का संगम समय कहलाता है। भक्तगण इस समय निद्रा-त्याग कर ईश्वर का ध्यान-भजन करते हैं। इसी प्रकार वर्तमान समय भी कलियुग रूपी घोर रात्रि और सतयुग रूपी दिन के मध्य का संगम समय चल रहा है। संगमयुग का महत्त्व समझने वाले ब्रह्मावत्स राजयोग के अभ्यास द्वारा नए युग अर्थात् सतयुग के स्वागत की तैयारी कर रहे हैं। अत: इस गुप्तयुग के महत्त्व को जानकर अब हमें नववर्ष के जश्न की तैयारियों के साथ-साथ नवयुग की ओर चलने की तैयारियाँ भी करनी हैं।

नया वर्ष शुरू होने से पूर्व, पुराने वर्ष के अंत में 'क्रिसमस' नामक त्योहार बड़े जश्न के साथ मनाया जाता है। इसमें बताया जाता है कि लाल वस्त्रधारी, सफेद दाढ़ी-मूँछ वाला वृद्ध सांताक्लोज, भोर होने से पूर्व सभी बच्चों की मनचाही सौगात क्रिसमस ट्री के नीचे रख देते हैं जिसे पाकर बच्चे आनन्द-प्रेम से भर जाते हैं। इस समय खूब रोशनी की जाती है और बाज़ार मिठाइयों से भरे रहते हैं। सभी प्रसन्न वदन से एक-दो को मुबारकबाद देते हैं। वास्तव में क्रिसमस किसी समुदाय विशेष का त्योहार न होकर संपूर्ण मानव जाति के लिये जश्न का समय है और एक गूढ़ आध्यात्मिक रहस्य को उजागर करता है। क्रिसमस, नए और पुराने वर्ष के संधिकाल के समय पर आता है। यह काल कलियुग और सतयुग के संधिकाल अर्थात् संगमयुग का प्रतीक है जो कि अभी चल रहा है। सांताक्लोज प्रतीक हैं, सर्वोच्च पिता परमात्मा के जो सफेद प्रकाश के एक सूक्ष्म बिंदु हैं। जिस परमधाम से हम आत्माएँ सृष्टि मंच पर आती हैं, वहाँ सुनहरा-लाल प्रकाश है, उसे ब्रह्माण्ड या ब्रह्मलोक कहते हैं। उसमें हम आत्माएँ अण्डे मिसल निवास करती हैं। सांताक्लोज लाल और सफेद रंग के कपड़ों में सुशोभित होते हैं, परमात्मा पिता भी ब्रह्मा के रक्तिम वर्ण मस्तक पर सफेद बिंदु की तरह सुशोभित होते हैं। सांताक्लोज की लंबी दाढ़ी दिखाते हैं। परमात्मा पिता स्वयं तो जन्म-मरण में नहीं आते लेकिन अपने बच्चों को ज्ञान देने के लिए एक वृद्ध तन में प्रवेश करते हैं, उनका नाम प्रजापिता ब्रह्मा रखते हैं। **भारतीय संस्कृति में ब्रह्मा ही एकमात्र ऐसे देवता हैं जिनको दाढ़ी दिखाई जाती है। यह सफेद लंबी दाढ़ी ईश्वरीय विवेक की प्रतीक है। परमात्मा ही ज्ञान के सागर हैं, अविनाशी हैं, बेहद के हैं और बिना किसी शर्त के सब कुछ देने वाले हैं। वे हमारे परम शिक्षक हैं। वे हमें ज्ञान-रत्नों के उपहार उस समय देने आते हैं जबकि हम अज्ञान की गहरी नींद में सोये होते हैं। वे हमें जाग्रत करते हैं और सब कुछ देकर भी सदा भरपूर रहते हैं। वे सदा दाता हैं और सतयुगी दुनिया में जाकर दैवी राजकुमार-कुमारी बनने का अविनाशी उपहार देकर जाते हैं।**

क्रिसमस ट्री प्रतीक है कल्पवृक्ष के ज्ञान का। चारों युगों के संपूर्ण चक्र को एक 'कल्प' कहा जाता है। इस पूरे कल्प के प्रारंभ, वृद्धि और फिर विनाश को एक वृक्ष के रूप में दर्शाया जाता है। इस कल्पवृक्ष का बीजरूप है परमपिता परमात्मा शिव। कल्पवृक्ष द्वारा मनोकामनाएँ पूर्ण होने का अर्थ यही है कि सृष्टि के बीजरूप परमात्मा के सान्निध्य में जो भी संकल्प या मनोकामनाएँ की जाती हैं वे तुरंत फलीभूत हो जाती हैं।

अब युग परिवर्तन की शुभ वेला है। हम दृढ़ निश्चय और हिम्मत के शुभ संकल्पों से पुराने संस्कार-स्वभाव, चाल-चलन का परिवर्तन कर सुख-शांति से भरपूर सुनहरी दुनिया में जाने का सौभाग्य प्राप्त कर सकते हैं। युग-युगांतर से हम सभी भगवान की महिमा गाते, पढ़ते और सुनते आये हैं। युग परिवर्तन की इस वेला में स्वयं गुरुओं के गुरु 'परमगुरु

शिव' कह रहे हैं, बच्चों, तुम अपने आदि स्वरूप में देवी-देवता थे। मैंने तुम्हें सर्वगुणों और शक्तियों से सजा कर, सर्वकलाओं से सुसज्जित कर देवी-देवता का रूप देकर नई दुनिया सतयुग में भेजा था परंतु समय परिवर्तन के साथ-साथ सतयुग से कलियुग की यात्रा करते-करते तुमने अपने दिव्य गुण, दिव्य शक्तियाँ और दिव्य स्वभाव-संस्कारों को भुला दिया है। अब दीन-हीन, कला विहीन होकर अपने ही आदि स्वरूप के आगे फरियाद कर रहे हो। तुम्हारी इस दयनीय दशा को देखकर मैं पुन: परमधाम से धरा पर अवतरित हुआ हूँ और ज्ञान-योग की पढ़ाई पढ़ाकर सतयुग में चलने लायक बना रहा हूँ।

समस्त प्रभु प्रेमी मानवात्माओं को, स्वर्णिम दुनिया के रचयिता परमात्मा शिव की ओर से नवयुग की बधाई और दिव्य संदेश है कि युग परिवर्तन के इस महारुद्रयज्ञ में पुराने स्वभाव-संस्कारों, अवगुणों-विकारों की आहुति डालकर शीघ्र से शीघ्र नई दुनिया स्थापन करने में प्रभु के सहयोगी बनो, तभी आने वाला समय मंगलमय होगा। नई दुनिया में पहुँचने के लिए पुरुषार्थ करने का समय भी पूरे वेग से खिसकता जा रहा है। अत: अब जागो, समय को पहचानो और प्रभु की श्रीमत पर कदम आगे बढ़ाओ।

❖

सच्चा साथी

ब्रह्माकुमारी निशा, ऊना रक्कड़ (हि.प्र.)

विश्व में ऐसा कौन प्राणी होगा जो यह न चाहता हो कि मेरा कोई साथी बने। हर व्यक्ति किसी न किसी को साथी अवश्य बनाता है ताकि मुसीबत के समय उससे सहायता मिले। वैसे भी मनुष्य जैसे सामाजिक प्राणी का जीवन, साथियों के बिना मुश्किल हो जाता है। जीवन-यात्रा में मनुष्य के अनेक साथी बनते हैं। जब बच्चा छोटा होता है तो माता-पिता को साथी समझकर चलता है। स्कूल में सहपाठियों को, समान आयु वाले बच्चों को मित्र बनाता है। शादी के बाद पति-पत्नी एक-दो के साथी बनकर चलते हैं लेकिन ये सभी साथी सांसारिक लेन-देन करने वाले ही होते हैं। ये दिल को थोड़े समय के लिए बहलाते हैं। ये अल्पकाल के सहारे हैं। ये आज तो हैं पर निश्चित नहीं कि कल भी रहेंगे। अब प्रश्न यह उठता है कि हमें सहारा किसका लेना चाहिए। जो स्वयं ही सहारा चाहता हो, उससे सहारा लेने की इच्छा रखना तो भारी भूल है। यह तो किसी भिखारी से भीख मांगने वाली बात ही हुई। स्वयं सहारा चाहने वाला दूसरे को ऊँचा उठा ही नहीं सकता। सहारा तो उसी का लेना चाहिए जो ऊँचा उठा सके, ऊँचा बना सके। जो व्यक्ति कमजोर शाखा पर झूला बांधकर झूलता है, वह थोड़े समय की ही खुशी मना सकता है अर्थात् जल्दी ही गिर पड़ता है। अत: सबसे सर्वोत्तम सहारा सर्वशक्तिवान परमपिता परमात्मा शिव का ही हो सकता है जो सभी आत्माओं के अविनाशी साथी हैं; जो कभी भी हमारा साथ नहीं छोड़ते हैं; जिन्हें सभी 'त्वमेव माता च पिता ...' कहकर याद करते हैं। दु:ख के समय सभी उस मातपिता को पुकारते हैं। एक परमात्मा के सिवाय अन्य कोई भी वस्तु, वैभव इस संसार में किसी को अन्त तक सहारा देने में समर्थ नहीं है। हमने पिछले 63 जन्मों में अनेक देहधारियों को अपना साथी बनाया लेकिन परिणाम दु:ख ही निकला। शिव बाबा भी कहते हैं – बच्चे, एक जन्म के लिए मुझ अविनाशी परमात्मा को सच्चा साथी नहीं बना सकते हो? तो आइये, परम सहारे परमात्मा को अपनाएं। जब प्रभु का हाथ और साथ मिल जाता है तो सारा संसार हमारा साथ देता है। तभी तो कहा गया है, ' जापे कृपा राम की होई, तापे कृपा करे सब कोई।'
अंत में कुछ पंक्तियाँ –

पीछे चलो उसी के, जो मंजिल का पता दे।
बैठो उसी नाव में, जो पार लगा दे।
ये शान, ये शौकत, ये जमीं, आसमां,
तेरे नहीं हैं, इन्हें औरों पे लुटा दे।
दाता खुद आया है तेरे दरवाजे पे प्यारे,
सब कुछ मिलेगा, तू साथी तो बना ले।

दृढ़ता से मिलती है सफलता

• ब्रह्माकुमारी विमला, आगरा

मेरा लौकिक जन्म पाकिस्तान के डेराइस्माइल खां ज़िले में हुआ। परिवार में सभी प्रभु-प्रेमी, भक्त और पूजा-पाठ करने वाले थे। पूजा-पाठ व गीता-भागवत् के अध्ययन के बाद ही भोजन करने का नियम था। बचपन से हमारे अंदर भी ऐसे ही संस्कार थे। जीवन का लक्ष्य भी भगवान को प्राप्त करना और समाज की सेवा करना, यही निश्चित किया था। परमात्मा को पाने की तीव्र उत्कंठा थी। इस पर मैंने एक कविता भी बनाई थी –

However difficult path
may it be
I have my ambition to
go thee
How many difficulties
come in my way
I have come to you
without any delay

विभाजन काल में हम पाकिस्तान से जब दिल्ली आये तो हमें पता चला कि माउंट आबू से देवियाँ आई हैं और बताती हैं कि भगवान आ चुका है। हमारे परिवार के सभी सदस्य और आस-पड़ोस के सभी लोग सत्संग में जाने लगे। एक दिन सत्संग में लौकिक माता जी को श्री कृष्ण का साक्षात्कार हुआ। वे बड़ी प्रसन्नता के साथ कहने लगीं कि मुझे भगवान के दर्शन हो गये। मैंने सोचा कि जब इनको दर्शन हो सकते हैं तो मुझे क्यों नहीं हो सकते? इससे पहले तो मैं यही सोचती थी कि जंगल में जाने पर ही भगवान मिलेगा। मैंने उसी दिन से अपने कमरे में तपस्या शुरू कर दी और अन्न का त्याग कर दिया और संकल्प लिया कि जब तक दर्शन नहीं होंगे तब तक अन्न ग्रहण नहीं करूँगी। तीन दिन के बाद मुझे पहले जगदंबा का, फिर श्री कृष्ण का, फिर अपने भी देवी रूप का साक्षात्कार हुआ। तभी दृढ़ संकल्प किया कि यह जीवन परमात्मा के हवाले कर देना है। मेरे लौकिक माता-पिता राजौरी गार्डन सेवाकेन्द्र पर बाबा से मिलने गए। उन दिनों बाबा सर्दियों में दिल्ली में आते थे। बाबा ने पिताजी से पूछा, इस बच्ची को ईश्वरीय सेवा में कब अर्पित करोगे? पिताजी ने तुरंत कहा, बच्ची तो आपकी ही है। बाबा ने कहा, लिखकर दो। पिताजी ने तुरंत लिखकर दे दिया। इस प्रकार मैं बाबा को अर्पित हुई। यह मेरा सौभाग्य रहा कि जहाँ बाबा और मम्मा आते थे वहाँ ही सेवा करने का सुअवसर मिला। हमें बहुत प्रेरणादायी लगता था कि बाबा ढाई बजे उठकर तपस्या में लीन हो जाते थे।

राजौरी गार्डन सेवाकेंद्र पर मेजर वर्मा कोर्स करने के लिए आने लगे। बड़ी दीदी ने कहा कि इनको बोलो कि ये बाबा को अपने घर बुलायें। उन दिनों दिल्ली में किसी आश्रम में इतना बड़ा सभागार नहीं था कि जहाँ पर

हज़ारों की संख्या में लोग बैठ सकें। मेजर ने बाबा को लिखा कि बाबा, युद्ध प्रारंभ हो चुका है, मेरे जाने का अचानक आदेश आ सकता है। मेरी हार्दिक इच्छा है कि मैं आपसे सम्मुख मिलूँ इसलिए आप हमारे घर पधारिये। बाबा ने पत्र लिखा कि बच्चे, आपने निश्चय-पत्र तो लिखा ही नहीं। उन दिनों ऐसा निश्चय-पत्र अवश्य लिखते थे कि **हमें 100 प्रतिशत निश्चय है कि परमपिता परमात्मा ब्रह्मा द्वारा सहज राजयोग सिखाकर सतयुगी दैवी स्वराज्य स्थापन कर रहे हैं।** उन्होंने यह भी लिख कर दिया। निश्चय-पत्र जैसे ही बाबा को मिला वैसे ही बाबा का उत्तर आया कि बच्चे, आपका निश्चय-पत्र मिला, बाबा दिल्ली ज़रूर आयेगा और लड़ाई बंद हो जायेगी। जैसे ही मेजर वर्मा के हाथ में पत्र आया, उसके ठीक एक घंटे बाद घोषणा हुई कि लड़ाई बंद हो गई है। मेजर को तो और ज्यादा निश्चय बैठ गया कि बाबा ने तो पहले ही बता दिया था कि लड़ाई

बंद हो जायेगी। बाबा उनके घर आये, हज़ारों की संख्या में लोग बाबा से मिलने आए।

एक बार हमने बाबा को नये साल की मुबारक दी तो बाबा ने कहा कि बच्चे, नव वर्ष तो 1-1-1 में होगा। यह तो पुरानी दुनिया का नव वर्ष है। एक बार बाबा ने पत्र लिखा, बच्ची, तुम्हें आप समान महारथी बनाकर, अपनी सेवा की ज़िम्मेवारी उन्हें सौंपकर, आगरा जाना होगा। सुदेश बहन, जो वर्तमान समय जर्मनी में हैं, ने सेवा को संभाला। इसके बाद बड़ी दीदी मनमोहिनी जी मुझको आगरा ले गई। अब तो आगरा में विशाल म्यूज़ियम बन गया है, इसकी प्रेरणा देने वाले तो अव्यक्त बापदादा हैं।

एक बार अव्यक्त बापदादा ने कहा, 'वण्डर ऑफ द वर्ल्ड – ताजमहल' के पास 'गॉड का वण्डर (म्यूज़ियम)' बनाना है, यह आश आगरा के बच्चों को पूरी करनी है। बहुत कठिनाई से म्यूज़ियम का स्थान मिला क्योंकि उसके पास बड़े-बड़े होटल हैं। दादी प्रकाशमणि जी ने इसकी नींव रखी। वहाँ के सचिव को जब नक्शा पास करने को दिया गया तो उसने पास नहीं किया। उसकी नीयत ठीक नहीं थी। उसके मन में था कि इनसे यह स्थान लेकर किसी और को ज्यादा कीमत में बेच दें क्योंकि यह स्थान मेन रोड पर है। लेकिन दादी जी ने कहा कि जल्दी म्यूज़ियम बनाना शुरू करो। उसी समय मैंने अन्न का त्याग किया और तपस्या भी शुरू कर दी। कुछ समय बाद रुद्रपुर में उत्तर प्रदेश के मंत्री भ्राता नारायणराम दास ने कोर्स किया। उसने मुख्यमंत्री को जाकर कहा कि हम अयोध्या के मंदिर के लिए इतनी मेहनत करते हैं, इधर एक बहन मंदिर ही तो बना रही है। उसने मंदिर के लिए अन्न का त्याग कर रखा है, क्या आप उसका नक्शा पास नहीं कर सकते? इतना सुनते ही मुख्यमंत्री ने सचिव को नक्शा पास करने की आज्ञा दी। फिर तो सैफी भाई (इजराइल), मीरा बहन (स्पेन), रिक भाई (अमेरिका), बिल्डर नंदकिशोर भाई (आगरा) ने अपना सहयोग दिया जिससे देश-विदेश के सहयोग से ''गैलरी ऑफ स्प्रीच्युअल लव एंड विज़्डम'' म्यूज़ियम बनकर तैयार हो गया। इसका उद्घाटन दादी जानकी जी ने तथा भूतपूर्व राज्यपाल विष्णुकांत शास्त्री जी ने किया।

अभी तो देश-विदेश के ब्राह्मण और नये आगंतुक ताजमहल के साथ म्यूज़ियम का भी लाभ उठाते हैं। बापदादा का दिल से शुक्रिया निकलता है कि करनकरावनहार बाबा ने निमित्त बनाकर मुझ आत्मा द्वारा यह श्रेष्ठ कार्य करवाया। बाबा आपका पद्मगुणा शुक्रिया! ❖

शान्तिवन डाकघर की विशेष सुविधायें

आपको यह सूचित करते हुए अत्यंत हर्ष होता है कि शांतिवन डाकघर में निम्नलिखित आधुनिक प्रौद्योगिकी से जुड़ी हुई इलैक्ट्रोनिक सेवायें भी उपलब्ध कराई गई हैं –

1. **वेस्टर्न यूनियन मनी ट्रांसफर –** विदेश से धन मंगवाने की त्वरित सुविधा उपलब्ध है।
2. **शान्तिवन डाकघर से ई-मनीऑर्डर –** भारत में कहीं से भी इलैक्ट्रोनिक विधि से राशि मंगवाई जा सकती है अथवा भेजी जा सकती है। 'ज्ञानामृत' अथवा 'द वर्ल्ड रिन्युअल' की शुल्क राशि अपने निकट के इस सुविधा प्राप्त डाकघर से I. M. O. (ई-मनीऑर्डर) द्वारा भेज सकते हैं। यह राशि 10 मिनट के अन्दर-अन्दर यहाँ प्राप्त हो जायेगी।
3. **ग्रीटिंग पोस्ट –** डाक विभाग द्वारा तैयार शुभ कामना संदेश के कार्ड यहाँ से खरीद कर पोस्ट कर सकते हैं।
4. बी.एस.एन.एल. के रिचार्ज कूपन भी मिलते हैं।
5. डाक विभाग द्वारा जारी नवीनतम फिलेटेली डाक टिकटें भी उपलब्ध हैं जो डाक टिकट संग्राहकों (philatelists) के लिए एक अच्छी खबर है।

अधिक जानकारी के लिए आप डाक विभाग की वेब साइट www.indiapost.gov.in पर log on **कर सकते हैं।**

मुझ गरीब को शाहों के शाह की गोद मिली

● **ब्रह्माकुमार विशम्भर दयाल, रानीबाग (दिल्ली)**

बात सन् 1960 की है। ईश्वरीय ज्ञान में चलने वाले एक भाई सुंदरलाल वकील द्वारा मुझे त्रिमूर्ति के चित्र वाला एक पर्चा मिला। मैं भक्ति मार्ग में चल रहा था। उस पर्चे में तीन देवताओं के ऊपर एक बिंदी बनी हुई थी जिस पर लिखा था परमपिता परमात्मा शिव। मेरे दिमाग में खलबली पैदा हुई कि इस बिंदी में ज़रूर कोई राज़ है। मैं देहली के कमला नगर क्षेत्र में रहता था, वहीं ब्रह्माकुमारी आश्रम था। वहाँ जाना हुआ तो शिव बाबा का सत्य परिचय मिला। मुझे यह ज्ञान हुआ कि शिव ही परमात्मा हैं और वे वर्तमान समय साधारण मनुष्य तन में अवतरित हुए हैं। उनको इन नेत्रों से देखने की बड़ी तमन्ना हुई। मुझे सेवाकेंद्र पर आते कुल दो ही मास हुए थे। दादी हृदयमोहिनी जी पार्टी लेकर मधुबन आ रही थी। मैंने भी आग्रह किया कि मैं भी चलूँगा। दादी जी ने नियम के अनुसार कहा कि पहले एक साल धारणा में रहो, फिर चलना। मैंने दादी जी से कहा, यदि कल ही मेरा शरीर छूट जाता है तो मैं इस अद्भुत चरित्र को देख नहीं पाऊँगा। मैंने ज़िद की तो जगदीश भाई ने ब्रह्मा बाबा को टेलीग्राम किया कि एक नया भाई आबू आना चाहता है। बाबा ने स्वीकृति दे दी कि बच्चा भले ही आए। बाबा से तो छुट्टी मिल गई पर दूसरी परीक्षा आ गई। मैं चावड़ी बाजार में पेपर की दुकान पर काम करता था, वहाँ से छुट्टी नहीं मिली। मालिक मुंबई गया हुआ था। मैंने मुंबई टेलीग्राम किया तो उत्तर मिला, दो दिन में आ रहा हूँ, आकर छुट्टी दूँगा। दो दिन के बाद वह आया और छुट्टी मिली परंतु मन में विचार आया कि अकेला कैसे जाऊँ, पता नहीं किस दिशा में है मधुबन?

अगले दिन क्लास पूरा होने पर जब उठा तो जगदीश भाई ने पूछा, विशम्भर भाई, क्या हुआ? मैंने कहा, छुट्टी तो मिल गई पर जाऊँ कैसे? जगदीश भाई ने फटाफट तैयार किया सत्यनारायण भाई को और कहा, इसको दस मिनट में तैयार करके स्टेशन भेज दो। बलदेव भाई को स्टेशन भेज दिया कि टिकट लेकर विशम्भर भाई को गाड़ी में बिठा आओ। आबू रोड पहुँचा, बस से ऊपर गया, संकल्प चला कि मेरे पास सामान बहुत है, कुछ जगदीश भाई ने भी दिया था। बस से उतरा तो आगे सुंदरलाल जी खड़े थे, बोले, भ्राता जी, आ गये। सामान सारा एक भाई को उठवा दिया और कहा, हम खाली हाथ चलेंगे। सारा बोझ ही उतर गया। बाबा के घर पहुँचे तो दादी गुलज़ार सामने थीं, बोली, विशम्भर भाई, आ गये, जल्दी तैयार होकर आओ, बाबा से मिलवाते हैं। मेरी तो लाटरी ही खुल गई। बाबा के कमरे में मैं, दादी और बाबा, चौथा कोई था नहीं। बाबा ने गोदी में लिया तो अनुभव हुआ कि गरीब घर वाले ने, शाहों के शाह की गोद ले ली। बाबा ने हिसाब पूछा कि बच्चा यज्ञ में कुछ करता है। दादी ने कहा, बाबा, कर्मणा सेवा करता है। बाबा ने पूछा, बच्चे, आठ आने हर महीने निकाल सकते हो? इतना सुनते ही मेरे नयनों से अश्रुधारा बह पड़ी। **कितनी बड़ी हस्ती और क्या कह रहे हैं? जिस पर करोड़ों न्योछावर करने वाले संसार में करोड़ों हैं, वे मेरे से आठ आने की माँग कर रहे हैं वो भी इसलिए कि उस भाग्य विधाता को मेरा भाग्य बनाना है। आज मैं अपने भाग्य को देख गर्वित हूँ। क्या मेरे जैसा ऊँचा भाग्य है किसी का? मीठे बाबा ने मेरे को क्या नहीं दिया? भक्त भगवान को भोग लगाते हैं, और यहाँ स्वयं भगवान अपने हाथों से हम बच्चों के मुख में टोली डालते। बाजरे की रोटी पर मक्खन लगाकर खिलाते। हम कहाँ थे, क्या थे, प्यारे बाबा ने हम बच्चों को पलकों पर बिठा लिया। फर्श से उठाकर अर्श पर बैठा दिया।** वे दिन भी याद आते हैं जब बाबा अपने हाथों से बच्चों को पत्र लिखते थे। प्यारे बाबा, मुझ साधारण आत्मा को चुनकर आपने विशेष में विशेष बना दिया। मीठे बाबा, प्यारे बाबा, कैसे मैं आपका शुक्रिया अदा करूँ! ❖

दिल की सुनने वाला दिलाराम बाबा

• ब्रह्माकुमार सुरेश पाल, शिमला

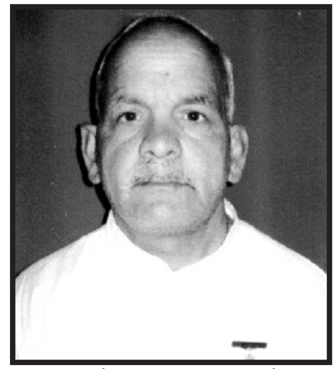

जन्म-जन्मान्तर की भक्ति के फल के रूप में मुझे भगवान सहज ही मिल गये। मैं अपनी बड़ी बहन जी के पास दिल्ली में रहता था। जब साकार प्रजापिता ब्रह्मा, दिल्ली में माथुर जी की कोठी पर आये थे तब हमारी बड़ी बहन वहाँ बाबा से मिलने गई थी। मैं भी दुकान बंद करके जैसे ही लोधी रोड स्थित माथुर जी की कोठी पर पहुँचा तो कार्यक्रम समाप्त हो चुका था और सभी अपने-अपने घरों को चले गये थे। मैं यह सोचकर उदास हो गया कि कोई गुरु जी आये थे और मैं उनके दर्शन भी नहीं कर सका।

कुछ दिन पश्चात् बहन जी का सुपुत्र शरीर छोड़ गया। इस कारण वे अशांत और दुखी रहने लगी। एक पड़ोसी बहन ने उन्हें सेन्टर का पता बताया तथा प्रेरित किया कि आप प्रतिदिन सेवाकेंद्र पर जाया करो। जैसे ही बहन जी सेवाकेंद्र पर जाने लगे, उनकी मानसिक स्थिति अच्छी होती गई। एक सप्ताह में ही काफी अच्छी हो गई। इस परिवर्तन से घर में सभी खुश हो गये। मुझे भी प्रेरित किया गया कि आप भी जाया करो। मैट्रिक की परीक्षा पूरी करके सन् 1963 में मैंने सेवाकेंद्र में प्रवेश किया। एक माता जी ने मुझे आत्मा तथा परमात्मा का सत्य परिचय दिया जिसे सुनकर लगा कि सारी जानकारी मिल गई है। इसके बाद माता जी ने कहा कि आपसे मिलने बहन जी आ रहे हैं। दूसरे कमरे से निकलकर लक्ष्मी बहन जी मेरे सामने आईं तो मुझे उनके द्वारा देवी सरस्वती का साक्षात्कार हुआ। मेरी जन्म-जन्म की आशा पूर्ण हो गई। बस उसी दिन से दृढ़ निश्चय हो गया कि पाना था सो पा लिया, अब और कुछ नहीं चाहिए। क्लास रूम में उस समय तीन ही चित्र होते थे। बाबा का फ्रेम किया हुआ गोल आकार का ज्योतिर्मय चित्र भी वहाँ था, जिसे देखकर बहुत ही अपनापन आया। ऐसा लगा कि पहले भी इस सेवाकेंद्र पर आया हूँ।

परमात्मा से मन-बुद्धि का संबंध जुड़ने से सभी सांसारिक इच्छाएँ समाप्त हो मन शांत हो गया। तीन दिन में ज्ञान का कोर्स पूरा हो गया। हम तीन स्टूडेन्ट एक ही परिवार से सुबह-सुबह क्लास के लिए जाने लगे। बहुत ही खुशी का अनुभव होता था। फिर तो सेवा बढ़ती गई। जगह-जगह प्रदर्शनियाँ लगाते रहते थे। सन् 1965 में शिमला में बहुत बड़ी प्रदर्शनी कालीबाड़ी हॉल में लगी। मधुबन से बाबा ने सेवा अर्थ सभी मुख्य भाई-बहनों को शिमला भेजा। निमित्त बन मैंने इस सेवा की जिम्मेवारी संभाली। सात दिन बहुत ही सेवा हुई। आखिर वो दिन भी आ गया जब प्यारे बाबा से मिलने मधुबन जाना हुआ। तीन अगस्त, 1965 को हम आबू पहुँचे। वहाँ बस स्टैंड पर बाबा की बैलगाड़ी हमारा सामान लेने आई हुई थी। हम पैदल ही पांडव भवन पहुँचे। बाबा के कमरे के पास सबसे पहले मुलाकात विश्वरत्न दादा जी के साथ हुई। दादा जी ने मुझे प्यार से गले लगा लिया। मैंने सोचा कि ना मैं इन्हें जानता हूँ और ना ही हमारा कोई रिश्ता, फिर भी मुझे इतना प्यार क्यों दिया। इस प्यार से मुझे भ्रम हो गया कि शायद यही ब्रह्मा बाबा हैं क्योंकि सुना तो था ही कि बाबा हरेक बच्चे पर बहुत प्यार लुटाते हैं। फिर मैंने देखा कि वहाँ नाश्ते, भोजन या सेवा कार्य के लिए बार-बार घंटी बजती थी और बच्चे यथास्थान पहुँच जाते थे। मैंने घंटी का राज़ पूछा तो बोले, यह भी स्कूल है, हर कार्य अनुशासन से होता है। उसी दिन दोपहर में, हाथ में कुदाली लिए हुए क्यारियों से बाहर आते बाबा पर मेरी नज़र पड़ी तो मैं चरण स्पर्श करने के लिए झुका। बाबा ने मुझे झुकने से रोका और फिर अपने गले से लगा लिया। बाबा ने 'मीठे बच्चे' कहकर

बहुत प्यार दिया और कहा – **बच्चे, किसी भी देहधारी के आगे झुकना नहीं। अभी तुम बालक सो आने वाली सृष्टि के मालिक हो। मुझे अपार खुशी हुई कि भगवान ने मुझे नई दुनिया के लिए चुन लिया और मीठा-मीठा कहकर मुझे भी मीठा बना दिया।** शुरू में किसी से बात करने में मैं बहुत झिझकता था तथा किसी से बात नहीं कर सकता था। बाबा की जैसे ही मेरे पर दृष्टि पड़ी, सारी झिझक खत्म हो गई।

अगले दिन बहन जी पार्टी के साथ हमें प्यारे बाबा से मिलाने ले गई। मैं आयु में सबसे छोटा था। बाबा ने गोदी में लेकर इतना प्यार दिया कि मैं अतीन्द्रिय सुख से भरपूर हो गया। हम बाबा के पास 15 दिन तक रहे। सम्मुख वाणी सुनी और पिकनिक की। उस समय बाबा के पास सिर्फ 23 भाई-बहनें थे। बाकी सेवा अर्थ बाहर गये हुए थे।

मैंने बाबा को बताया कि मैं शिमला का रहने वाला हूँ, फिर कहा, बाबा, वहाँ भी सेन्टर होना चाहिए। बाबा ने मुस्कराते हुए कहा, शिमला तो राजधानी है, वहाँ जरूर सेन्टर खुलेगा। बाबा ने पूरा भरोसा दिलाया। दो वर्ष के पश्चात् सन् 1967 में ही शिमला में सेवाकेंद्र खुल गया। एक बार बाबा ने कहा, बच्चे गली-गली में सेन्टर होगा, आबू रोड से माउंट आबू तक लाइन लगेगी। यह सुनकर पहले तो मैं मुस्कराया कि बाबा क्या कह रहे हैं क्योंकि उस समय यह संस्था कुछ ही शहरों में थी और लोग भी बड़ा विरोध करते थे। लेकिन आज हम बाबा के वे महावाक्य साकार होते देख रहे हैं। एक बार एक बुजुर्ग मेरे पास आया और बोला, दिल्ली में मेरी बहुत संपत्ति है, मेरे पुत्र नहीं है, मैं आपको गोद का पुत्र बनाना चाहता हूँ। वह दो-तीन बार आया। मैंने यह सारा समाचार बाबा को लिख भेजा। बाबा ने पत्र का उत्तर दिया कि आपको तो भगवान ने गोद का पुत्र बना लिया है। ऐसे कई लोग आपकी परीक्षा लेने आएँगे। इनके चक्कर में नहीं आना। कुछ समय बाद उस व्यक्ति का झूठ सामने आ गया। इस प्रकार प्यारे बाबा, इस गंदी दुनिया की पकड़ से, कदम-कदम पर बच्चों की रक्षा करते रहे। मेरे मन में एक ही इच्छा थी कि जैसे बाबा ने अनेक आत्माओं की पालना की ऐसे मैं भी तन-मन-धन से ईश्वरीय सेवा में समर्पित हो जाऊँ। बाबा ने मेरी इच्छा पूरी की और सन् 1977 से सेवाकेंद्र पर ही समर्पित हूँ। तन-मन-धन से ईश्वरीय सेवा में तत्पर हूँ। बाबा का बहुत-बहुत शुक्रिया कि बाबा ने मेरे दिल की आवाज़ सुनी भी और पूरी भी की।

❖

हम करते अभिनंदन

ब्रह्माकुमारी ऋतु मंजरी

चारु चन्द्र की किरणों-सा उजियारा है मुखमंडल
नैनों की नेह फुहारों से जो करते तन-मन चंदन
मुख से झरते पुष्प ज्ञान के, सब करते हैं वंदन
ऐसे ब्रह्मा आदिदेव का हम करते अभिनंदन!!

मानवता के हैं आभूषण, ब्राह्मण कुल के भूषण
जगमग जगमग रूप दिखाकर हर्षित करते क्षण-क्षण
गीता के भगवान की मुरली, करती अधरों पर गुंजन
सुनकर महावाक्य शिव के हम हो जाते कंचन-कंचन

आप मुए तो मर गई दुनिया, चरितार्थ कर दिखलाते
सब कुछ देकर के शिव को, वे ट्रस्टी रूप दिखा जाते
ऐसे भागीरथ के मुख से देते शिव ज्ञान के अंजन
ऐसे पावन ट्रस्टी रथ का शिव करते आलिंगन

ब्र.कु. आत्मप्रकाश, सम्पादक, ज्ञानामृत भवन, शान्तिवन, आबू रोड द्वारा सम्पादन तथा ओमशान्ति प्रिन्टिंग प्रेस, शान्तिवन -307510, आबू रोड में प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय के लिए छपवाया। सह-सम्पादिका - ब्र.कु. उर्मिला, शान्तिवन
E-mail : omshantipress@bkivv.org Ph. No. : (02974) - 228125 worldrenewal@bkivv.org